पॉलो
कोएल्हो
वीडा

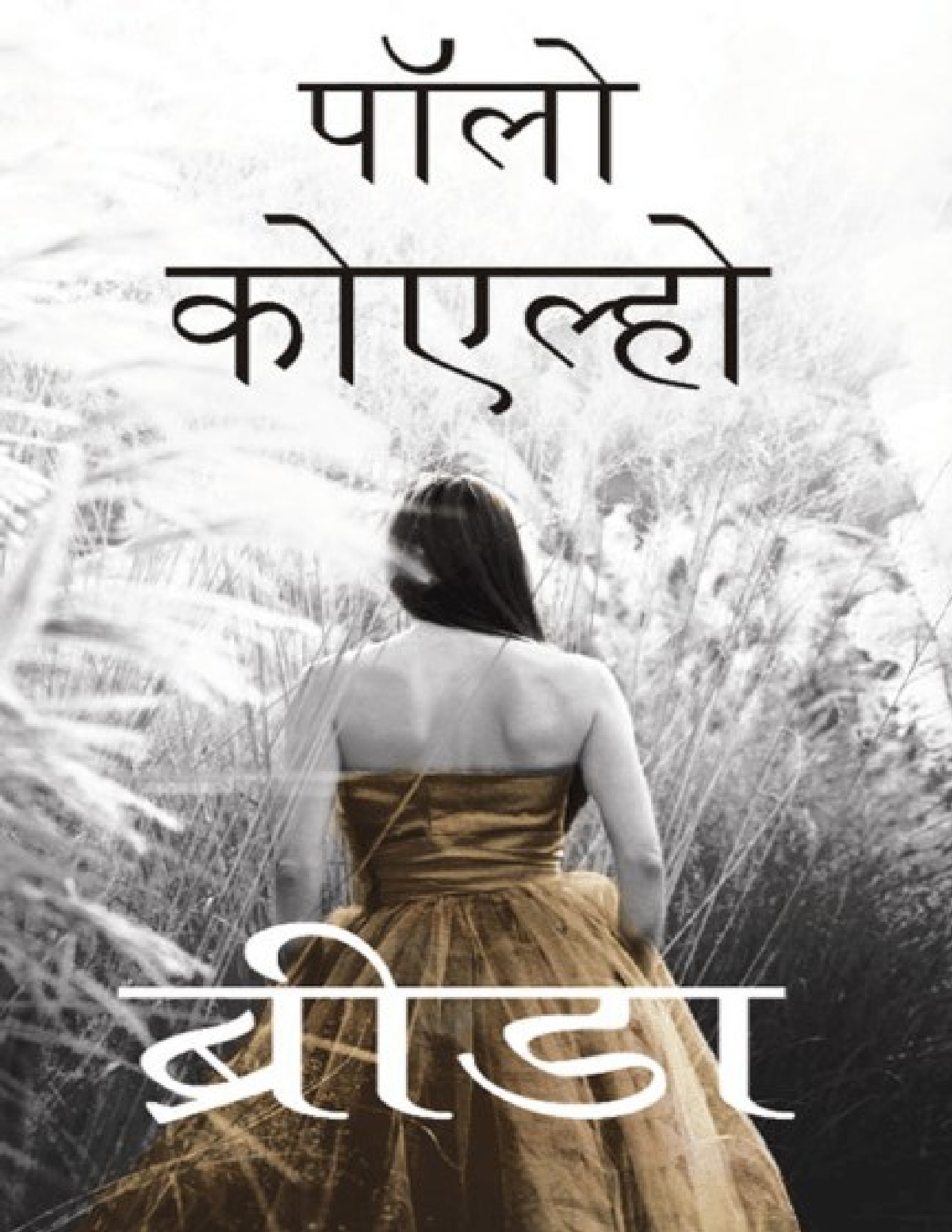

पॉलो कोएल्हो

ब्रीडा

अनुवाद

नीर कंवल मानी

हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया

है कौन भला वो औरत

जो दस चाँदी की अशर्फ़ियों में से एक गुमा कर, बैठ जाती है चैन से?

जलाती है चिराग, बुहारती है सारा घर,

और ढूँढती है हर कोने में

उसके मिल जाने तक।

और जब ढूँढ लेती है उसे, तो बुलाती है सब पड़ोसियों को, कि मुँह मीठा

करो,

मिल गई मुझे वो अशर्फी जो खो दी थी मैंने।

एन०डी०एल० के लिये जिसने करिश्मे कर दिखाये,

क्रिस्टीना के लिये, जो उनमें से एक है,

और ब्रीडा के लिये।

चेतावनी

मेरी किताब द डायरी ऑफ अ मेगस में मैंने राम मेडिटेशन (RAM MEDITATION) की दो क्रियाओं को हटा कर उनकी जगह वे दो क्रियाएँ रख दी है जो मैंने ड्रामा मँडली के दिनों में सीखी थीं। चाहे कि इससे परिणाम पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, मुझे अपने गुरु से सख्त हिदायत मिली, ज़रूर और हमेशा ही आसान या तेज़ असरदार तरीके या राहें होंगी,

लेकिन सबसे अहम बात यह है कि परम्परा अक्षुण्ण रहे। उसमें कतई कोई बदलाव नहीं आना चाहिए।'

इस कारण से, ब्रीडा में जिन अनुष्ठानों का वर्णन है वे चन्द्र परम्परा के अनुयायियों द्वारा सैकड़ों बरसों से बिना किसी बदलाव के ज्यों-के-त्यों किये जा रहे हैं — और यह एक स्पष्ट और विशिष्ट परम्परा है जिस पर चलने के लिये कड़ा अनुभव और अभ्यास, दोनों चाहिए। बिना संरक्षण व सहायता के, इस तरह के अनुष्ठानों का आचरणख़तरनाक है। न इन्हें करना चाहिए, न इनकी ज़रूरत है, और ये आध्यात्म की खोज में काफी नुकसानदायक सिद्ध हो सकते हैं।

पॉलो कोएल्हो

पुरोवाक्

उन दिनों लूर्दे के कैफे में हम देर रात गये तक बैठे रहा करते। मैं रोम की पवित्र तीर्थयात्रा कर रहा था। और अभी मुझे अपने 'ग़िफ्ट' यानि ईश्वर की दी हुई ख़ास देन को पहचानने और पाने के लिये काफ़ी फासला तय करना था। वह ब्रीडा ओ'फर्न थी और यात्रा के एक हिस्से में सुविधाओं का ख़याल रखने के लिये जिम्मेदार थी।

सितारे की आकृति वाली तीर्थयात्रा की सड़क पर पायर्नीज़ के अनुयायी सदियों से चलते आये हैं। लूर्दे में बिताई कई रातों में एक रात मैंने उससे पूछा कि उस सड़क पर आये एक ख़ास गिरजे में क्या उसे कोई ख़ास अनुभव या अहसास हुआ था?

'मैं वहाँ कभी नही गई,' उसने जवाब दिया।

मुझे काफ़ी हैरानी हुई, क्योंकि यकीनन उसके पास ईश्वर की देन, उसका 'ग़िफ्ट' तो था।

'सब सड़कें रोम ही जाती हैं।' ब्रीडा मुझे पुरानी कहावत के ज़रिये बता रही थी कि ग़िफ्ट तो कहीं भी जगाये जा सकते हैं।

'मैंने अपनी दीक्षा की राह आयरलैंड में चली।'

बाद की मुलाकातों में उसने मुझे अपनी तलाश की कहानी सुनाई। जब कहानी ख़त्म हुई तब मैंने पूछा कि क्या मुझे उसकी कहानी लिखने की इजाज़त थी? पहले तो वह मान गई, लेकिन उसके बाद जब भी हम मिले, वह अड़चनें खड़ी करती गई। कभी कहती कि मुख्य पात्रों के नाम बदल दो, कभी पूछती कि कैसे लोग किताब पढ़ेंगे, और कि उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी।

'मुझे नहीं पता, लेकिन इतने बहाने बनाने की कोई और ही वजह है।' मैंने कहा।

‘तुम सही हो,’ वह बोली। ‘असल में यह एक ही इंसान की ज्याती कहानी हैं, और मुझे नहीं लगता कि इससे किसी और को फायदा होगा।’

लेकिन अब हम दोनों मिलकर यह जोखिम उठाने जा रहे हैं, ब्रीडा। परम्परा में से एक अनाम किताब का कहना है कि जीवन में हर इंसान दो में से एक नज़रिया अपना सकता है : या तो इमारत की तरह बनाने का, या पौधे की तरह उगाने का। निर्माण करने वाले चाहे बरसों लगायें, एक दिन अपना काम ख़त्म कर डालते हैं। तब वे ख़ुद को अपनी ही दीवारों के बीच कैद पाते हैं। जैसे ही इमारत बननी ख़त्म हो जाती है ज़िन्दगी के मायने भी ख़त्म हो जाते हैं।

और फिर वो हैं जो जीवन उगाते हैं। वे तूफानों और हर मौसम की मार सहते हैं और विरले ही आराम करते हैं, लेकिन इमारत के उलट, बागीचे में उगने का काम कभी ख़त्म नहीं होता। और चाहे उसे माली की लगातार देख-रेख चाहिए होती है, लेकिन माली का जीवन भी पुरज़ोर करामातों से भरा होता है।

और माली हमेशा ही एक-दूसरे को पहचान लेते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि हर पौधा पूरी दुनिया के उगने की कहानी कहता है।

—लेखक

आयरलैंड

अगस्त १९८३—मार्च १९८४

ग्रीष्म और पतझड़

‘मैं जादू के बारे में सीखना चाहती हूँ,’ लड़की ने कहा। उसके होने वाले गुरु यानि मेगस ने उसे ध्यान से देखा। रंग उड़ी हुई जीन्स, टी-शर्ट, और चुनौती देता अन्दाज़, जो शर्मीले लोग अक्सर अपना लेते हैं — खासतौर पर जब बिल्कुल ज़रूरत न हो। ‘मैं इससे दुगनी उम्र का तो हूँ ही,’ वह सोच रहा था। और बावजूद इसके, वह जानता था कि वह अपनी आत्मा के दूसरे हिस्से के सामने था।

‘मेरा नाम ब्रीडा है,’ वह बोलती गई। ‘मैंने इस पल का बहुत इन्तज़ार किया है, और मैंने सोचा न था कि मैं व़क्त आने पर इतनी घबरा जाऊँगी।’

‘तुम जादू के बारे में क्यों सीखना चाहती हो?’

‘ताकि मैं ज़िन्दगी के बारे में अपने सवालों के जवाब ढूँढ सकूँ; ताकि मैं नज़ूमी ताकतों के

बारे में जान सकूँ, और गर मुमकिन हो, तो अतीत में पीछे, और भविष्य में आगे जाकर देख सकूँ।'

यह पहली बार नहीं था कि जंगल में आकर उससे किसी ने ऐसी माँग रखी थी। एक व़क्त था जब उसे परम्परा में गुरु का पद और सम्मान हासिल थे। उसने कई शिष्य लिये थे और उसे विश्वास था कि अपने आसपास के लोगों को बदलने से दुनिया बदली जा सकती थी। लेकिन वह चूक गया था। और परम्परा के गुरुओं को चूकने की इजाजत नहीं थी।

'तुम्हें नहीं लगता कि तुम काफ़ी छोटी हो?'

'मैं इक्कीस की हूँ, और बैले डांस सीखने के लिये मेरी उम्र निकल चुकी है।'

मेगस ने उसे अपने पीछे आने का इशारा किया। वे एक भी शब्द बिना बोले जंगल में चल दिये। 'वो सुन्दर है,' डूबते सूरज की तेजी से लम्बी होती परछाइयों के बीच चलते वह सोच रहा था। 'लेकिन मैं उससे दुगनी उम्र का हूँ।' और इसका मतलब वह जानता था — काँटे और दुख।

ब्रीडा को अपने साथ चलने वाले की चुप्पी से झुँझलाहट हो रही थी, उसने तो उसकी बात का जवाब तक नहीं दिया था। जंगल की मिट्टी गीली और पतझड़ के पत्तों से ढकी थी, और उसे भी लम्बी होती परछाइयों और तेज़ी से घिरती रात का अहसास था। जल्द ही अँधेरा हो जायेगा और उनके पास टॉर्च नहीं थी।

'मुझे इन पर विश्वास तो करना ही होगा,' ब्रीडा ने ख़ुद को समझाया। गर मुझे यह विश्वास है कि ये मुझे जादू सिखा सकते हैं, तो मुझे यह भी भरोसा रखना होगा, कि ये मुझे जंगल पार करवा देंगे।'

वे चलते रहे। यूँ लगा जैसे वह बिना किसीख़ास दिशा में चले, यूँ ही भटक रहे थे। कई बार वे गोलाई में चले, और एक ही जगह से तीन या चार बार निकले।

'शायद ये मेरा इम्तिहान ले रहे हैं।' वह पीछे हटने को कतई तैयार नहीं थी और ख़ुद से यही कहती रही कि जो कुछ भी हो रहा था — जंगल में बार-बार चक्कर लगाना भी — कोई बड़ी बात नहीं थी।

वह बहुत दूर से आई थी और इस मुलाकात से उसे बहुत-सी उम्मीदें थीं। डब्लिन नब्बे मील से भी ज़्यादा दूर था और गाँव तक आने वाली बसें बेआराम व बेव़क्त थीं।

यहाँ आने के लिये उसे पौ फटते उठना पड़ा था। तीन घण्टे सफ़र करने के बाद लोगों से पता लगाना पड़ा कि वह कहाँ मिलेंगे, और साथ ही सवालों की झड़ी का सामना, कि उसे इतने

अजीब आदमी से क्या काम था। आख़िर को किसी ने बताया कि दिन के उस व़क्त वह जंगल के किस हिस्से में हो सकता था, लेकिन चेतावनी के साथ, कि पहले भी वह गाँव की एक लड़की पर डोरे डालने की कोशिश कर चुका था।

'आदमी दिलचस्प है।' वे अब चढ़ाई चढ़ रहे थे, और ब्रीडा मना रही थी कि सूरज कुछ देर और आसमान में बना रहे। उसे डर था कि कहीं वह गीले पत्तों पर फिसल न जाये।

'सच बताओ, तुम जादू क्यों सीखना चाहती हो?'

ब्रीडा ने शुक्र मनाया कि चुप्पी तो टूटी। लेकिन जवाब तो पहले वाला ही दिया।

वह अब भी सन्तुष्ट न था।

'शायद तुम जादू इसलिये सीखना चाहती हो कि यह अबूझ और रहस्य भरा है, क्योंकि यह वो जवाब दिलवाता है जो विरले ही ढूँढ पाते हैं, वह भी पूरी ज़िन्दगी लगा देने के बाद। या शायद इसलिये कि यह बीते व़क्तों के रोमांस को ज़िन्दा कर देता है।'

ब्रीडा कुछ न बोली। जानती ही नहीं थी कि क्या बोले। कहीं कुछ ऐसा न कह दे जो महागुरु मेगस को बुरा लगे। अब वह पहले वाली चुप्पी में लौट जाना चाहती थी।

आखिरकार पूरा जंगल पार कर वे एक पहाड़ी की चोटी पर आ पहुँचे।ज़मीन पथरीली थी और कोई पेड़-पौधे न थे। लेकिन फिसलन भी न थी और ब्रीडा बिना मुश्किल मेगस के पीछे चल सकती थी।

वह ऐन शिखर पर बैठ गया और ब्रीडा को भी बैठने को कहा।

'लोग यहाँ पहले भी आये हैं,' मेगस बोला। 'वे भी मुझसे जादू सीखना चाहते थे, लेकिन मैं वो सब सिखा चुका हूँ, जो मैंने सिखाना था। मैं इंसानियत का क़र्ज अदा कर चुका हूँ। अब मैं अकेला रहना चाहता हूँ, कि पहाड़ चढ़ूँ, पौधे उगाऊँ और ईश्वर के साथ हम-एक हो जाऊँ।

'यह सच नहीं,' लड़की बोली।

'क्या सच नहीं?' वह हैरान होकर बोला।

'हो सकता है कि आप ईश्वर के साथ हम-एक होना चाहते हों, लेकिन यह सच नहीं कि आप अकेले रहना चाहते हैं।'

बोलते ही ब्रीडा पछताई, क्योंकि उसने बिना सोचे बोल दिया था और अब गलती सुधारने की गुँजाइश न थी। शायद ऐसे लोग थे जो वाक़ई अकेला रहना चाहते थे। शायद औरतों को मर्दों की ज़रूरत कहीं ज़्यादा थी, और मर्दों को औरतों की कम।

मेगस की आवाज में झुँझलाहट न थी। 'मैं तुमसे एक सवाल करने जा रहा हूँ, और तुम्हें जवाब पूरी ईमानदारी से देना है। गर सच बताओगी, तो जो चाहती हो, मैं सिखाऊँगा। झूठ बोला, तो इस जंगल में वापिस न आना।'

ब्रीडा ने शुक्र की साँस ली। वो सवाल पूछने वाले थे। उसे सिर्फ़ सच बताना था, बस। उसने तो सोचा था कि शागिर्द बनाने से पहले गुरु बहुत मुश्किल चीज़ें माँगते हैं।

'मान लो कि मैं तुम्हें सिखाने को तैयार हो जाऊँ,' उसने अपनी आँखें ब्रीडा पर टिका दीं और बोलना शुरू किया। 'मान लो कि मैं तुम्हें वे सभी ब्रह्माण्ड दिखाना शुरू करूँ जो हमारे गिर्द हैं, फरिश्ते, प्रकृति का ज्ञान, सूर्य परम्परा और चन्द्र परम्परा के गुप्त रहस्य। फिर एक दिन, तुम फल-सब्ज़ी की ख़रीदारी करने कस्बे में जाती हो और वहाँ गली के बीचों-बीच तुम्हें वह शख्स मिल जाता है जो तुम्हारी ज़िन्दगी का प्यार है।'

'मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मैं उसे कैसे पहचानूँगी,' ब्रीडा ने सोचा, मगर कुछ न बोली। यह सवाल उसके अन्दाज़े से कहीं ज़्यादा पेचीदा था।

'उसे भी यही अहसास है और वह तुम्हारे पास आता है। तुम्हें एकदूसरे से प्रेम हो जाता है। तुम मेरे साथ अपनी पढ़ाई जारी रखती हो। मैं तुम्हें सृष्टि का ज्ञान देता हूँ, और रात को वह तुम्हें प्रेम का ज्ञान। लेकिन फिर एक व़क्त आता है जब तुम्हें दोनों में से एक को चुनना होगा।'

मेगस कुछ पल को रुका। अपना सवाल पूछने से पहले उसे लड़की के जवाब का डर लग रहा था। उसका उस शाम वहाँ आना दोनों के जीवन में एक अवस्था का अन्त दर्शा रहा था। वह यह जानता था क्योंकि वह परम्पराओं और गुरुओं के तात्पर्य भली-भाँति समझता था। उसे भी ब्रीडा की उतनी ही ज़रूरत थी जितनी ब्रीडा को उसकी, लेकिन ब्रीडा को उसके पूछे गये सवाल का सच्चाई से जवाब देना था, सिर्फ़ एक यही शर्त थी।

'अब इस सवाल का पूरी ईमानदारी से जवाब दो,' उसने अपनी पूरी हिम्मत बटोर कर आख़िर कहा। 'क्या तुम अपना तब तक का सीखा ज्ञान त्याग दोगी — वे सभी सम्भावनायें और रहस्य, जो जादू की दुनिया तुम्हें दे सकती है, ताकि तुम अपने प्रेम को निभा सको?'

'मुझे अपनी तलाश और ज़्यादा ज़िन्दगी की ख़ुशी में कोई टकराव नहीं लगता।'

'मेरे सवाल का जवाब दो।' उसकी आँखें अभी भी ब्रीडा पर टिकी थीं। 'क्या तुम उस शख्स

के लिये सब कुछ छोड़ दोगी?’

ब्रीडा को ज़ोर से रुलाई आ रही थी। यह सवाल कम, चुनाव ज़्यादा था। ऐसा चुनाव जो किसी की भी ज़िन्दगी का सबसे मुश्किल फ़ैसला होता। और इस बारे में वह पहले ही बहुत सोंच चुकी थी। ऐसा व़क्त भी था जब दुनिया में उसके ख़ुद से ज़्यादा अहम कुछ भी न था। तब तक के महसूस किये हर अहसास में, प्रेम ही सबसे कठिन अहसास रहा था। और उस व़क्त वह अपने से कुछज़्यादा उम्र के शख्स से प्रेम में थी। वह भौतिकी पढ़ रहा था और दुनिया के प्रति उसका नज़रिया ब्रीडा के नज़रिये से बिल्कुल जुदा था। एक बार फिर, वह अपने जज़्बातों पर विश्वास करके अपना सारा विश्वास समेट प्रेम पर न्यौछावर कर रही थी। लेकिन उसे इतनी बार नाउम्मीद होना पड़ा था कि अब उसे किसी भी बात का भरोसा न था। लेकिन फिर भी, यह उसकी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा जुआ था।

वह मेगस से नज़रें चुराये रही। उसकी आँखें गाँव और उसकी जगमगाती रौशनियों पर टिकी थी। प्रेम के ज़रिये सृष्टि को समझने की कोशिश तो समय जितनी ही पुरानी थी।

‘मैं सब कुछ छोड़ दूँगी,’ वह आखिर में बोली।

ब्रीडा को लगा कि उसके सामने खड़ा शख्स लोगों के दिल पर गुज़री को कभी समझ न पायेगा। वह जादू की ताकत और अबूझ रहस्य तो जानता था, लेकिन इंसानों को नहीं। उसके बाल खिचड़ी थे, धूप से पका चेहरा और ऐसा कद-काठ जो पहाड़ों में चलने वालों का होता है। उसमें बेहद कशिश थी, कि आँखों से झलकती आत्मा में ढेरों जवाब थे, और यह भी, कि फिर से आम इंसानों के जज़्बात उसकी कसौटी पर पूरे न उतरेंगे। वह ख़ुद भी अपने से निराश थी, लेकिन झूठ नहीं बोल सकती थी।

‘मुझे देखो,’ मेगस ने कहा।

ब्रीडा को ख़ुद पर शर्म आ रही थी, लेकिन जैसा कहा गया था, वैसा किया।

‘तुमने सच बोला है। मैं तुम्हारा गुरु बनूँगा।’

अँधेरा उतर आया और बिना चाँद की उस रात में सितारे चमक रहे थे। उस अजनबी को अपनी जीवन कहानी कह देने में ब्रीडा को दो घण्टे लगे। उसने वह सब बताने की कोशिश की जिससे जादू में उसकी रुचि उजागर हो — बचपन में दिखे दैवी नजारे, घटनाओं का पूर्वानुमान, या अन्दर से उठी दिव्य प्रेरणा — लेकिन लाख खोजने पर भी उसे अपने भीतर ऐसा कुछ न मिला। उसे सिर्फ़ एक प्रबल जिज्ञासा थी — बस इतना ही। और इसी वजह से उसने ज्योतिष, टैरो और न्युमरॉलॉजी में कई कोर्स किये थे।

‘ये सब केवल भाषायें हैं,’ मेगस ने कहा, ‘और सिर्फ़ यही नहीं। जादू इंसानी जज़्बात की सभी ज़ुबानें बोलता है।’

‘तो फिर जादू ख़ुद क्या है’, ब्रीडा ने पूछा। अँधेरे में भी, ब्रीडा जान गई कि वह उससे परे मुड़ गया था। वह आसमान को देखता सोच में डूबा खड़ा था, शायद जवाब ढूँढता हुआ।

‘जादू एक पुल है,’ उसने आखिर में कहा, ‘ऐसा पुल जो हमें दृश्य संसार से अदृश्य संसार में जाने का रास्ता देता है, और इन दोनों ही दुनियाओं के सबक सीखना मुमकिन बनाता है।’

‘और उस पुल को पार करना मैं कैसे सीखूँगी?’

‘अपना रास्ता ख़ुद ढूँढना होगा। हर एक का रास्ता अलग है।’

‘यही ढूँढने तो मैं यहाँ आई थी।’

‘दो तरीके हैं,’ मेगस ने जवाब दिया।

‘सूर्य परम्परा, जो अन्तरिक्ष और हमारे गिर्द फैली दुनिया के ज़रिये से सभी रहस्य खोलती है, और चन्द्र परम्परा, जो व़क्त और व़क्त की स्मृतियों मेंक़ैद जज़्बातों के जरिये सिखाती है।

ब्रीडा समझ गई थी। सूर्य परम्परा थी रात, पेड़, शरीर को जकड़ रहा जाड़ा, आसमान में चमकते सितारे। और चन्द्र परम्परा थी उसके सामने खड़ा वह शख्स, जिसकी आँखों में पूवर्जों द्वारा दिया गया ज्ञान चमक रहा था।

‘मैंने चन्द्र परम्परा सीखी,’ मेगस बोला, जैसे कि उसने ब्रीडा के ख़याल पढ़ लिये थे, ‘लेकिन मैंने वह परम्परा कभी नहीं पढ़ाई। मैं सूर्य परम्परा का गुरु हूँ।’

‘तो मुझे सूर्य परम्परा ही पढ़ाइये,’ ब्रीडा को थोड़ा अजीब लग रहा था, क्योंकि उसे मेगस की आवाज में नरमाई का पुट महसूस हुआ था।

‘जो मैंने सीखा है, वह तुम्हें ज़रूर सिखाऊँगा, लेकिन सूर्य परम्परा के कई रास्ते हैं। हर इंसान में ख़ुद को सिखाने की क्षमता होती है और उस क्षमता में विश्वास रखना ही चाहिए।’

ब्रीडा सही थी। मेगस की आवाज में हल्का-सा लाड़ था और इससे तसल्ली होने की जगह ब्रीडा को डर लग रहा था। ‘मैं जानती हूँ कि मुझमें सूर्य परम्परा समझने की क्षमता है।’

मेगस ने सितारों से आँखें हटाईं और समाने खड़ी लड़की पर टिका दीं। वह जानता था कि वो सूर्य परम्परा सीखने के लिये पूरी तरह तैयार नहीं थी, और यह कि फिर भी उसे

सिखाना होगा। कुछ शिष्य अपने गुरु ख़ुद ही चुनते हैं।

‘पहला सबक देने से पहले, मैं तुम्हें एक बात याद दिला देना चाहता हूँ। जब तुम्हें अपनी राह मिल जाये, तो डरना नहीं है। तुममें अपनी ग़लतियाँ करने के लिये तमाम हिम्मत होनी चाहिए। नाकामयाबी, हार और निराशा वे ज़रिये हैं जो ईश्वर हमें रास्ता दिखाने के लिये इस्तेमाल करता है।

‘अजीब ज़रिये हैं,’ ब्रीडा बोली। ‘ये अक्सर लोगों को आगे चलने से रोक देते हैं। मेगस इन ज़रियों के होने की वजह समझता था, अपने शरीर और आत्मा दोनों में ही उसने इन्हें भरपूर महसूस किया था।

‘मुझे सूर्य परम्परा ही सिखाइये,’ ब्रीडा की आवाज में दृढ़ता और सच्चाई थी।

मेगस ने ब्रीडा को चट्टान के सहारे आराम से बैठने को कहा।

‘आँखें बन्द करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अपने चारों ओर की दुनिया को ध्यान से देखो और जितना हो सके, समझने की कोशिश करो।

‘सूर्य परम्परा, हर क्षण, हर मनुष्य को शाश्वत ज्ञान के दर्शन दे रही होती है।’

ब्रीडा ने पूरा कहना मानने की कोशिश की, लेकिन उसे लगा कि मेगस बहुत तेज चल रहे थे।

‘यह पहला, और सबसे अहम सबक है,’ वह बोला। ‘यह एक स्पेन के मिस्टिक का बनाया सबक है जिसे विश्वास के सही मायने मालूम थे। उसका नाम था सेंट जॉन ऑफ द क्रॉस।’

मेगस ने लड़की का उत्सुक और विश्वास भरा चेहरा देखा। अपने दिल में वह दुआ कर रहा था, कि वह वो सब समझ जाये, जो वह उसे सिखाना चाहता था। क्योंकि वो आखिरकार उसकी सोलमेट थी, चाहे कि यह वो अभी जानती न थी। चाहे कि वो अभी बेहद कच्ची थी, और इस दुनिया की चीज़ों और लोगों से अभी भी सम्मोहित थी।

अँधेरे में ब्रीडा जंगल में वापिस जाते मेगस की धुँधली-सी परछाई ही देख पाई। वह उसके बाईं ओर के पेड़ों में ओझल हो गया। ब्रीडा को वहाँ अकेले छूट जाने का डर लग रहा था पर उसने शान्त रहने की कोशिश की। यह उसका पहला सबक था, और उसे यह बिल्कुल नहीं दिखाना था कि वह डरी हुई थी।

‘उसने मुझे अपना शिष्य माना है। उसे निराश तो नहीं कर सकती।’

वह ख़ुद से ख़ुश थी, और साथ ही हैरान भी, कि यह सब कितनी जल्दी हो गया था। ऐसा न था कि उसे अपनी काबलियत पर भरोसा न था — उसे ख़ुद पर नाज़ था, और अपनी मेहनत पर भी, जो उसे यहाँ तक ले आई थी। उसे यकीन था कि मेगस कहीं आस-पास ही थे, उसकी प्रतिक्रियायें देखते, यह आँकने को तैयार, कि क्या वह जादू का पहला सबक सीखने के काबिल थी। उन्होंने हिम्मत की बात की थी, और इसलिये चाहे कि उसे डर लग रहा था — उसे बहादुरी तो दिखानी ही थी। और थोड़ी ही देर में, वे वापिस आयेंगे, उसे पहला सबक पढ़ाने को।

'और मुझमें ताकत है, हिम्मत भी है,' वह हर साँस ख़ुद से दोहराती रही। वह ख़ुश किस्मत थी कि ऐसे इंसान का साथ मिला, जिसे दुनिया या तो प्यार करती थी, या नफ़रत।

जो शाम उन्होंने अभी एक साथ बिताई थी उसमें अब ब्रीडा को फिर से वह पल याद आया जब मेगस की आवाज में नरमाई, या कुछ छू जाने वाला अहसास था। 'शायद उन्हें मैं दिलचस्प लगी होऊँगी। शायद वह मुझसे प्यार ही करना चाहते हों।' वह अहसास भी बुरा न होगा, लेकिन, उनकी आँखों में कोई और चमक भी थी।

'क्या बेतुकी बातें सोचती हूँ!' कहाँ तो एक ओर एक पुख्ता सच्चाई की खोज में थी — एक विद्या सीखने समझने की राह पर, और अचानक अपने बारे में यूँ सोच रही थी, जैसे महज़ कोई औरत। उसने इस बारे में दोबारा न सोचने की कोशिश की, और तब अचानक देखा कि मेगस को उसे अकेला छोड़ कर गये कितना ज़्यादा व़क्त गुज़र चुका था।'

घबराहट दबे पाँव आई थी और अब उस पर हावी होती जा रही थी। उसने इस शख्स के बारे में दोनों ही तरह की बातें सुनी थीं। कुछ ने कहा था कि उसमें अप्रतिम शक्तियाँ थीं, कि वह मात्र सोचने भर से वायु की दिशा बदल सकता था और बादलों में सुराख। और ब्रीडा, बाकियों की तरह ही, इस तरह के करिश्माई वजूद में बेहद दिलचस्पी रखती थी।

लेकिन कुछ और लोग, जो जादू की दुनिया की कगार पर थे, जिनके साथ ब्रीडा ने जादू के कोर्स और कक्षाएँ लगाई थीं — पूरी तरह मानते थे कि वह काले जादू का उपासक था, और एक बार उसका प्रयोग उसने एक आदमी को मारने में किया था, क्योंकि वह उस आदमी की पत्नी से प्रेम कर बैठा था।

और यही कारण था कि महागुरु होने के बावजूद उसे जंगलों में अकेलेपन की सज़ा मिली थी।

'शायद अकेलेपन ने उन्हें और पागल बना दिया है,' ब्रीडा ने सोचा, और फिर से केंचुली खोलती घबराहट उस पर हावी होने लगी। चाहे वह उम्र में छोटी थी लेकिन जानती थी कि अकेलापन क्या कहर ढा सकता था,ख़ासतौर पर जब उम्र ढल रही हो। वह ऐसे लोगों से मिल चुकी थी जो ज़िन्दगी की चमक खो बैठे थे क्योंकि वे एकाकीपन से जद्दोजहद में खेत

रहे थे और अब उसी के ग़ुलाम बन कर रह गये थे। उनमें से अधिकतर मानते थे कि दुनिया बेग़ैरत और बकबकी जगह थी, और जो हर शाम, हर रात दूसरों कीग़लतियों के बखान करने में बिताया करते थे। ये वे लोग थे जिन्हें अकेलेपन ने दुनिया का ठेकेदार बना डाला था, जो अपनी अनचाहे, अनपूछे फैसले हर आती जाती हवा को बड़बड़ा देते थे, कोई सुने, या न सुने। शायद महागुरु भी एकाकीपन से पागल हो गये थे।

पास में अचानक एक आवाज़ हुई और ब्रीडा हड़बड़ा कर उठी। डर से कलेजा मुँह को आ गया। पहले वाली हिम्मत अब काफ़ूरहो चुकी थी। चारों ओर देखा — कुछ भी न था। अन्तड़ियों से ख़ौफ की लहर उठी और जैसे पूरी देह में फैल गई।

'ख़ुद पर काबू रखना होगा,' लेकिन यह नामुमकिन था। आँखों के सामने साँप, बिच्छू और बचपन से डरावने लगते भूत-प्रेतों के नज़ारे तैरने लगे। ख़ौफ इतना बढ़ गया कि काबू में रहना न हो सका। एक और नज़ारा आँखों के सामने उठा। जादूई ताकतों का वशीकरण किये जादूगर जिसने शैतान के साथ सौदा किया था और जो बदले में उसी की बलि चढ़ाने को था।

'आप कहाँ हो?' वह चिल्लाई। अब उसे कोई परवाह न थी कि कोई क्या सोचेगा। वह सिर्फ़ वहाँ से निकल जाना चाहती थी।

कोई जवाब न आया।

'मैं यहाँ से निकलना चाहती हूँ! मेरी मदद करो।'

सिर्फ़ वह घना जंगल था और उसकी अबूझ आवाज़ें। ख़ौफ से ब्रीडा का सिर घूम रहा था और उसे लगा कि वह बेहोश हो जायेगी। लेकिन बेहोश नहीं होना था। अब जबकि उसे यकीन था कि वे आसपास कहीं न थे, बेहोश होने से कोई फ़ायदा न था। उसे ख़ुद पर काबू रखना होगा।

यह ख़याल आते ही वह चेत गई कि कहीं-न-कहीं वह ख़ुद पर काबू रखने की कोशिश कर रही थी। 'मुझे आवाज़ें नहीं लगानी,' उसने ख़ुद से कहा। उसकी पुकार उस जंगल में रहने वाले और मर्दों भी सुन सकते थे, और जो मर्द जंगल में अकेले रहते हैं वे किसी भी जंगली जानवर से ज़्यादा ख़तरनाक हो सकते हैं।

'मुझमें आस्था है,' उसने धीमी आवाज में कहना शुरू किया। 'मुझे ईश्वर में आस्था है, और आस्था है अपने रक्षक फ़रिश्ते में, जो मुझे यहाँ लाया और जो यहाँ मेरे साथ है। मैं यह तो नहीं बयान कर सकती कि वह कैसा दिखता है, लेकिन मैं जानती हूँ कि वह यहाँ पास ही में है। मैं पत्थर से ठोकर नहीं खाऊँगी।'

यह प्रार्थना बचपन में उसकी दादी ने सिखाई थी जो कुछ व़क्त पहले ही गुज़री थीं। जैसे ही उसने माँगा कि काश दादी वहाँ उसके पास होतीं, उसे एक दोस्ताना मौजूदगी का अहसास हुआ।

अब उसे समझ आने लगा था कि ख़तरे और ख़ौफ में काफी बड़ा फ़र्क़ होता है। ब्रीडा ने देखा कि उसे पूरी प्रार्थना धीरे-धीरे, शब्द-दर-शब्द याद आ रही थी, और डर के बावजूद, अब वह ज़्यादा शान्त थी। और उसके पास कोई विकल्प भी न था। या तो वह ईश्वर में आस्था रखती, और अपने रक्षक फ़रिश्ते में, या फिर निराशा के आगे घुटने टेक देती।

जब वह छोटी थी, तो कई बार रात को डर से उठ बैठती थी। उसके पापा उसे गोद में उठा खिड़की पर ले जाते और वहाँ से उसे शहर की रोशनियाँ दिखाते जहाँ वे रहते थे। उन सभी लोगों के बारे में बताते जो उस व़क्त, रात को भी काम कर रहे थे। उसके पापा उन सभी राक्षसों को भगाने की कोशिश कर रहे थे जिनसे उसने अपनी रात भर ली थी — वे उनकी जगह उन लोगों को बसा रहे थे जो अँधेरे के ऊपर पहरा देते थे। 'रात तो दिन का ही एक अंश है,' वे कहा करते थे।

रात दिन का ही एक अंश है। इसलिये वह अँधेरे में उतनी ही सुरक्षित थी जितनी कि रोशनी में। और उस रक्षक, दयालु उपस्थिति को उसने अँधेरे में ही तो बुलाया था। उस पर भरोसा तो करना ही होगा। और उस भरोसे को ही आस्था कहते हैं। आस्था को कभी समझा नहीं जा सकता, लेकिन इस समय जो वह अनुभव कर रही थी उसे ही आस्था कहते हैं : एक न कहा जा सकने वाला विसर्जन, रात की सबसे काली गहराई के भीतर। इस रात का अस्तित्व केवल उसकी आस्था से था।

और न ही करिश्मे समझाये जा सकते हैं, लेकिन वे भी आस्था रखने वालों के लिये होते हैं।

'उन्होंने पहले सबक के बारे में कुछ कहा था,' अब कुछ-कुछ समझ आने लगा था। वह दयालु उपस्थिति इसलिये वहाँ थी क्योंकि ब्रीडा को उस में आस्था थी।

अब उसे इतने सारे घण्टों में तनाव की थकान महसूस होने लगी थी। वह फिर से सामान्य होने लगी, और हर सांस के साथ, हर पल, वह और सुरक्षित महसूस करती गई।

उसके पास आस्था थी। और आस्था जंगल में साँप बिच्छुओं को बसने न देगी। यही विश्वास उसके रक्षकफ़रिश्ते को जगाये रखेगा, कि डर पर पहरा लगा रहे।

उसने फिर से चट्टान का सहारा लिया और, पता नहीं कब, सो गई।

रोशनी थी जब वह जगी और एकख़ूबसूरत सूरज उसके चारों ओर की हर चीज़ को सुनहरी

बना रहा था। उसे थोड़ी ठण्ड लग रही थी, उसके कपड़े मैले थे लकिन उसकी आत्माख़ुशी के उत्सव मना रही थी। उसने पूरी रात जंगल में अकेले बिताई थी।

उसने अपने चारों ओर देखा, मेगस के लिये, लेकिन जानती थी कि वे वहाँ न होंगे। वे ज़रूर ही जंगल में घूम रहे होंगे, ईश्वर से जुड़ने की कोशिश में, और शायद कुछ सवाल भी सोचते होंगे, कि जो लड़की पिछली रात उनसे मिलने आई थी, क्या उसमें सूर्य परम्परा का पहला सबक सीखने का साहस रहा था या नहीं।

'मैंने अँधेरी रात के बारे में सीखा,' उसने अब चुप्पी साधे जंगल से कहा। 'मैंने सीखा कि ईश्वर की खोज अँधेरी रात है, कि आस्था भी अँधेरी रात है। और यह भी कोई हैरानी की बात नहीं, क्योंकि हमारे लिये हर दिन भी अँधेरी रात है। हममें से कोई नहीं जानता कि अगले पल क्या होने वाला है, और फिर भी हम आगे बढ़ते जाते हैं। क्योंकि हम भरोसा करते हैं। क्योंकि हमारे पास आस्था है।'

या, कौन जाने, शायद इसलिये, कि हम अगले पल में छिपे रहस्य देख नहीं पाते।

वैसे फ़र्क नहीं पड़ता था। ज़रूरी बात थी यह जानना कि अब उसे समझ आ गई थी कि जीवन का हर पल आस्था पर टिका है। कि तुम उसे साँप-बिच्छुओं से भरना चुन सकते हो, या एक पुरज़ोर दयालु रक्षक शक्ति से। कि आस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता, वह बस एक अँधेरी रात थी। और उसे बस या तो स्वीकार करना था या नहीं।

ब्रीडा ने अपनी कलाई पर बँधी घड़ी देखी और कि देर हो चली थी। उसे बस पकड़नी थी, तीन घण्टे का सफ़र करना था और अपने बॉयफ्रेंड को देने के लिये अच्छा-सा बहाना सोचना था। वह कभी विश्वास न करेगा कि उसने पूरी रात जंगल में अकेले बिताई थी।

'बहुत-बहुत मुश्किल है, यह सूर्य परम्परा।' उसने जंगल को ऊँची आवाज में बताया। 'मुझे अपना गुरु ख़ुद बनना होगा, और मुझे इसका अनुमान नहीं था।'

उसने पहाड़ से नीचे फैले गाँव को देखा, मन-ही-मन जंगल तक का रास्ता नापा और चल दी। लेकिन पहले, वह अपनी चट्टान की ओर मुड़ी। ऊँची औरख़ुशी भरी आवाज में वह चिल्लाई :

'एक बात और है। आप एक बेहद दिलचस्प शख्स हो।'

एक बूढ़े पेड़ के तने के सहारे खड़ा महागुरु मेगस लड़की को जंगल में ओझल होते देखता रहा। उसने उसके सभी ख़ौफ सुने थे और रात भर उसकी कातर पुकारें भी सुनी थीं। एक पल ऐसा भी आया था कि वह उसके पास जा उसे गले लगाना चाहता था, उसे उसके ख़ौफ से छाँव दे, बताना चाहता था कि उसे इस तरह की चुनौती की ज़रूरत नहीं।

अब वह ख़ुश था कि उसने ऐसा नहीं किया था, और उसे गर्व था, कि यह लड़की, चाहे कच्ची उम्र की उलझनों में अभी रास्ता न जानती थी, फिर भी उसकी आत्मा की पूरक अंश थी, वो जो उसे पूरा करती थी, उसकी सोलमेट थी।

डब्लिन शहर के बीचों-बीच एक किताबों की दुकान है जो जादू और परालौकिक विषयों के लिये विशेष जानी जाती है। इस दुकान को कभी इश्तिहार नहीं लगाने पड़े, वहाँ जाने वाले लोग किसी-न-किसी के बताने पर जाते हैं, और दुकान का मालिक इस तरह के चुनिन्दा और जानकार ग्राहकों से सन्तुष्ट है।

फिर भी, दुकान तो भरी रहती है। ब्रीडा ने भी दुकान के बारे में सुना था। एक दिन काम से छुट्टी के बाद वह दोपहर को वहाँ जा पहुँची थी और दुकान उसे बेहद पसन्द आई थी।

तबसे जब भी मुनासिब हो, वह वहाँ किताबें देखने जाती थी। लेकिन महागुरु मेगस के साथ हुए अनुभव के बाद से वह कुछ सावधान हो गई थी। कई बार वह ख़ुद से यह दुखड़ा रोती, कि वह उन्हीं चीज़ों में हिस्सा ले पाती थी जिन्हें वह समझ सकती थी। उसे यह अहसास था कि वह ज़िन्दगी की किसी बेहद अहम चीज़ से वंचित थी और फिर भी उसमें बदलने का साहस न था। अपना रास्ता पाने के लिये उसे लगातार संघर्ष में जुटे रहना था, और अब, जबकि उसने अँधेरी रात अनुभव कर ली थी तो वह जान गई थी कि वह उसमें से होकर गुज़रना नहीं चाहती थी।

किताबें ज़्यादा ठीक थीं। शेल्फ-दर-शेल्फ सैकड़ों बरसों पहले लिखी किताबों के संस्करण थे। यह ऐसा विषय था जिसमें बहुत कम लोग कुछ नया कहने का साहस करते थे। और इन किताबों के पन्नों में समय के अन्तराल से छिपी जादुई विद्याएँ और परालौकिक ज्ञान हर पीढ़ी के उसे खोलने के प्रयत्नों पर हँस देना प्रतीत होता था।

किताबों को देखने के अलावा, उस दुकान में जाने का ब्रीडा का एक और मकसद भी था : बाकी ग्राहकों को देखना और उन्हें समझना। उनमें से कुछ बहुत ज़हीन लगते, ऐसी शक्तियों और ताकतें जगा सकने में समर्थ, जिनका हाड़मांस के इंसानों को अन्दाज़ा तक न था। और फिर वे थे जो उन जवाबों की तलाश में लगे थे जिन्हें वे भूल चुके थे, मगर जिनके बिना जीवन अर्थहीन था।

उसने यह भी देखा कि सबसे नियमित ग्राहक मालिक से ज़रूर बात करते थे। विचित्र विषयों के बारे में, जैसे चन्द्रमा के पक्ष, नगों और पत्थरों के गुण और अनुष्ठानों में प्रयोग होने वाले शब्दों का सही उच्चारण।

एक दोपहर ब्रीडा ने भी यही करने की हिम्मत जुटाई। वह काम से लौट रही थी और दिन अब तक अच्छा ही गुजरा था। उसने सोचा कि अच्छी किस्मत का पूरा फायदा उठा लेना

चाहिए।

‘मैं जानती हूँ कि इन विषयों पर कई गुप्त समूह बने हुए हैं,’ वह बोली। उसे लगा था कि यह अच्छी शुरुआत होगी। वह ‘कुछ’ तो जानती थी।

लेकिन मालिक ने सिर्फ़ अपने खाते से आँखें हटाईं और उसे हैरानी से देखा।

‘मैं जंगलों में महागुरु मेगस के साथ थी,’ ब्रीडा अब कुछ अचकचा रही थी। ‘उन्होंने मुझे अँधेरी रात के बारे में समझाया था।

‘और यह भी कि ज्ञान की राह पर चलने का अर्थ है कि ग़लतियों से डरना नहीं चाहिए।’

उसने देखा कि मालिक अब उसकी बात ध्यान से सुन रहा था। यदि महागुरु ने उसे कुछ सिखाने की ज़हमत उठाई थी तो ज़रूर ही उसमें कुछ ख़ास था।

‘यदि तुम जानती हो कि अँधेरी रात ही ज्ञान की राह है, तो तुम्हें किताबों की ज़रूरत क्यों है?’ उसने आखिर में कहा। ब्रीडा समझ गई मेगस का जिक्र करना कामयाब नहीं हुआ था।

‘क्योंकि मैं उस तरीके से नहीं सीखना चाहती।’

मालिक ने उस लड़की को और ध्यान से देखा। जबकि यह साफ़ था कि सामने खड़ी लड़की को ईश्वर का वरदान था, ‘गिफ़्ट’ था, फिर भी अजीब था कि मेगस ने उस पर इतना व़क्त लगाया था। ज़रूर कोई और बात भी थी। वह झूठ भी बोल रही हो सकती थी लेकिन फिर उसने अँधेरी रात का ज़िक्र भी किया था।

‘तुम यहाँ अक्सर आती हो,’ वह बोला। ‘आती हो, कुछ किताबें पढ़ती हो लेकिन कुछ ख़रीदती नहीं हो।’

‘सभी बहुत मँहगी हैं,’ ब्रीडा बोली। वह जान गई थी कि वह बात जारी रखना चाहता था। ‘लेकिन मैंने और किताबें पढ़ी हैं और कई कोर्स भी किये हैं।’ उसने अपने अध्यापकों के नाम बाताये, यह सोचकर, कि शायद वह और ‘इम्प्रेस’ हो जाये।

लेकिन फिर से, वैसा न हुआ जैसा ब्रीडा ने सोचा था। मालिक ने उसकी बात काटी और एक और ग्राहक को ध्यान देने लगा जिसने अगले सौ बरस की ग्रहों की स्थितियों का ब्यौरा देने वाली किताब का ऑर्डर दिया था।

वह अब काफ़ी घबरा रही थी। उसकी शुरुआती हिम्मत अब फ़ना हो चुकी थी, लेकिन उसे इन्तज़ार तो करना ही था, जब तक मालिक ने दूसरे ग्राहक को निपटा न दिया। सिर्फ़ तब ही मालिक वापिस उसकी ओर मुड़ा।

‘आगे क्या कहूँ, मुझे नहीं पता,’ ब्रीडा बोली। उसकी आँखों में आँसू डबाडबा रहे थे।

‘तुम्हें अच्छे से क्या आता है?’ मालिक ने पूछा।

‘जिसमें मैं विश्वास करूँ, उसकी तलाश करना।’ यही एक मुमकिन जवाब था, वह अपनी ज़िन्दगी अपने विश्वास की तलाश में जी रही थी। परेशानी यह थी कि वह हर दिन किसी नई चीज़ में विश्वास करती थी।

मालिक ने अपने हिसाब वाले काग़ज़ पर एक नाम लिखा, वह छोटा-सा टुकड़ा फाड़ा और एक पल को अपने हाथ में पकड़े रहा।

‘मैं तुम्हें एक पता दे रहा हूँ,’ वह बोला। ‘एक व़क्त था जब लोग जादुई अनुभवों को भी आम ज़िन्दगी ही मानते थे। तब न तो पुजारी थे और न ही कोई परालौकिक के रहस्यों के पीछे भागता था।’

ब्रीडा समझ नहीं पाई कि वह उसी की बात कर रहा था या नहीं।

‘क्या तुम जानती हो कि जादू क्या है?’

‘दृश्य और अदृश्य दुनिया के बीच का पुल।’

मालिक ने उसे वह काग़ज़ का पुर्जा पकड़ा दिया। उस पर एक फ़ोन नम्बर था, और एक नाम — विका।

ब्रीडा ने हडबड़ी में वह पुर्जा लिया, उसे थैंक्स कहा और निकल गई। जब वह दरवाज़े पर पहुँची तो मुड़ी और बोली :

‘मैं यह भी जानती हूँ कि जादू कई भाषाओं में बोलता है, यहाँ तक कि किताब बेचने वालों की भाषा में भी, जो मदद न करने का नाटक करते हैं। लेकिन जो असल में बेहद उदार और मददगार हैं।’

उसने हवा में एक चुम्बन उछाला और गायब हो गई। दुकान मालिक अपने बही खाते पर खड़ा दुकान में चारों ओर देखता रहा।

‘महागुरु मेगस ने उसे यह सब सिखाया था,’ वह सोच रहा था। कोई भी ईश्वरीय देन, चाहे जितनी भी पुरज़ोर क्यों न हो, मेगस के दिलचस्पी लेने का कारण नहीं हो सकती। ज़रूर कोई और कारण भी है। विका पता लगा लेगी।

दुकान बन्द करने का व़क्त हो गया था।

कुछ दिनों से दुकान मालिक ने देखा था कि उसके ग्राहक बदल रहे थे। अब छोटी उम्र वाले भी परालौकिक विषयों में रुचि ले रहे थे। और जैसा कि उसकी अल्मारियों में रखे प्राचीन ग्रन्थों में लिखा था, दुनिया वापिस अपनी शुरुआत की ओर मुड़ रही थी।

वह पुरानी इमारत कस्बे के बीचों-बीच थी, ऐसी जगह जहाँ टूरिस्ट उन्नीसवीं सदी के रोमांसवाद की यादें ताजा करने जाते हैं। विका ने मिलने की हामी भरने में एक सप्ताह लगा दिया था और अब आखिरकार ब्रीडा पत्थर की बनी पुरानी इमारत के सामने खड़ी थी। इमारत यों ही कई राज़ खोलने को थी और ब्रीडा अपनी आतुरता बस किसी तरह काबू में रखे थी। जैसा सोचा था, इमारत ठीक वैसी थी : जादू की किताबों की दुकान में जाने वाले लोग ऐसे ही घरों में रहते होंगे।

लिफ़्ट न थी। वह सांस सँभाले धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ती गई, और अपनी मंज़िल पर पहुँच वहाँ के एक ही दरवाज़े की घण्टी बजाई।

अन्दर से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आयी, और फिर कुछ देर बाद, एक छरहरी, ख़ूबसूरत और गम्भीर लग रही औरत ने दरवाजा खोला।

'मैंने पहले फ़ोन किया था,' ब्रीडा बोली।

विका ने हाथ से अन्दर आने का इशारा किया, और ब्रीडा ने ख़ुद को एक पूरे सफ़ेद कमरे में पाया। कमरे में हर जगह मॉडर्न आर्ट के उदाहरण थे, दीवारों पर पेंटिंग्स और मेज़ों पर आधुनिक आकृतियाँ व पात्र। बाहर की रोशनी सफ़ेद पर्दों से छन कर अन्दर आ रही थी। कमरे को बेहद सलीके से अलग-अलग हिस्सों में बाँट दिया गया था। एक ओर सोफ़े, एक ओर खाने की मेज़ और तीसरा हिस्सा किताबों से भरी लाइब्रेरी। सब कुछ सावधानी और ख़ूबसूरती से चुना गया, कि ब्रीडा को आर्किटेक्चर और डिज़ाइन की कीमती मैगज़ीनें याद हो आईं जो वह कभी-कभी अ़खबारों की दुकान पर देखा करती थी।

'इस पर तो ढेरों ख़र्च हुआ होगा,' ब्रीडा सोच रही थी।

विका उसे भरपूर खुले लिविंग रूम में एक ओर ले गई जहाँ लॅदर और स्टील की बनी दो आराम कुर्सियाँ थीं और बीच में स्टील की टाँगों पर टिकी काँच की नीची मेज़।

'बहुत छोटी हो,' आखिर को विका बोली।

बैले नृत्य सीखने की उम्र वगैरह के बारे में बात करना फिजूल था, तो ब्रीडा बिना कुछ कहे विका के आगे बोलने का इन्तज़ार करती रही, और इस दौरान यही सोचती रही कि इतनी पुरानी इमारत में इतने आधुनिक डिज़ाइन का घर क्या कर रहा था। ज्ञान की खोज के

उसके रोमांटिक विचारों को एक और झटका लगा था।

‘उसने फोन किया था मुझे,’ विका बोली, और ब्रीडा समझ गई कि उसका अर्थ किताबों की दुकान के मालिक से था।

‘मैं गुरु की खोज में आई हूँ। मैं जादू की राह चलना चाहती हूँ।’

विका ने ब्रीडा को ध्यान से देखा। साफ़ था कि उसे ईश्वरीय देन थी, लेकिन महागुरु मेगस को उसमें इतनी दिलचस्पी क्यों थी, पहले यह जानने की जरूरत थी। ईश्वरीय देन, या ‘गिफ़्ट’ अपने में काफ़ी न था।

यदि महागुरु जादू की दुनिया में नये होते तो शायद इस बात से प्रभावित हो जाते कि लड़की में ईश्वरीय देन किस बेलौसी से ज़ाहिर थी, लेकिन वे तो इस राह के माहिर थे और जानते थे कि यह देन हर किसी में छिपी होती है। वे ऐसे छलावों में आने वाले नहीं थे।

विका उठी, किताबों की अल्मारी पर गई और अपनी पसन्दीदा टैरो काईस की गड्डी उठा लायी।

‘कार्ड लगाने जानती हो?’ उसने पूछा।

ब्रीडा ने सिर हिला कर हामी भरी। उसने कई कोर्स किये थे और जानती थी कि औरत के हाथ में टैरो के कार्ड थे, हर गड्डी के अठहत्तर कार्ड। ब्रीडा ने टैरो के कार्ड लगाने के सभी तरीके सीखे थे और अब शुक्र मनाया कि वह भी कुछ दिखा सकती थी। लेकिन औरत ने गड्डी नहीं छोड़ी। उसने कार्ड शफल किये और काँच की मेज़ पर उल्टे छितरा दिये।

लेकिन अपने किसी भी कोर्स में ब्रीडा ने यह नहीं देखा था। औरत उन्हें देखती कुछ देर बैठी रही, और फिर एक अनजान भाषा में कुछ शब्द बोले और सिर्फ़ एक कार्ड को पलट दिया।

तेईसवाँ कार्ड था। चिड़ी का राजा। ‘अच्छी सुरक्षा में हो,’ विका बोली। ‘एक ताकतवर और शक्तियाँ लिए मर्द, जिसके गहरे भूरे बाल हैं, तुम्हारा रक्षक है।’

उसका दोस्त न ताकतवर या, न शक्तिशाली, और महागुरु के बाल तो पक चुके थे।

‘उसके, शरीर और कद काठ के बारे में मत सोचो,’ विका ने जैसे उसके मन की बात पढ़ ली थी। ‘अपनी आत्मा के पूरक, अपने सोलमेट के बारे में सोचो।’

‘आत्मा का पूरक,’ ब्रीडा हैरान थी। यह औरत उसके मन में एक अजीब-सा आदर भाव जगा रही थी, और जो महागुरु या किताब घर मालिक के प्रति आदर से बिल्कुल अलग था।

विका ने जवाब नहीं दिया। उसने फिर से कार्ड बेतरतीब किये, और उन्हें फिर से मेज़ पर छितरा दिया लेकिन इस बार उसने सभी कार्ड सीधे बिछाये थे।

बीचों-बीच कार्ड नम्बर ग्यारह था, जिसमें एक औरत जबरन शेर का मुँह खोल रही थी।

विका ने कार्ड उठाया और ब्रीडा को उसे पकड़ने को कहा। आगे क्या करना था, यह बिल्कुल न जानते हुए ब्रीडा ने कार्ड पकड़ लिया।

'पिछले सभी जन्मों में, तुम्हारी आत्मा का ज़्यादा ताकतवर अंश हमेशा ही औरत रहा है।' विका ने कहा।

' ''आत्मा का पूरक,'' का अर्थ क्या है?' ब्रीडा ने फिर से पूछा। यह पहली बार था कि उसने विका को चुनौती दी थी, लेकिन फिर भी, यह चुनौती एक छोटी और कमज़ोर चुनौती थी।

एक पल के लिये विका कुछ न बोली। मन में एक सन्देह-सा उठा — किसी कारण से महागुरु ने लड़की को आत्मा के पूरक अंश के बारे में नहीं बताया था। 'बकवास,' उसने ख़ुद से कहा, और मन में आये सन्देह को एक ओर बुहार दिया।

'जब किसी को चन्द्र परम्परा की राह चलना होता है तो आत्मा के पूरक अंश की समझ पहला सबक होता है,' वह बोली। 'और इसे समझने के बाद ही यह समझ सकते हैं कि विद्या समय के पार कैसे जीवित रहती है।'

विका ने समझाना जारी रखा और ब्रीडा चुपचाप, उत्सुकता में सुनती रही।

'हम सभी शाश्वत हैं क्योंकि हम सभी ईश्वर का साकार रूप हैं,' विका बोली। 'इसीलिये हम इतने जन्म लेते हैं, और मृत्यु को प्राप्त होते हैं, किसी अज्ञात जगह से आते और उतनी ही अज्ञात जगह की ओर जाते।'

'तुम्हें इस तथ्य की अच्छे से आदत डाल लेनी होगी कि जादू में ऐसी कई चीज़ें हैं जिनकी न तो व्याख्या है और न ही कभी की जायेगी। ईश्वर ने कुछ चीज़ें बस एक तरीके से करने का निश्चय किया और ऐसा क्यों किया, इसका कारण सिर्फ़ वे ही जानते हैं।'

'आस्था की काली रात,' ब्रीडा के मन में कौंधा। तो यह चन्द्र परम्परा में भी मौजूद थी। 'सच्चाई यह है, कि ऐसा होता ही है,' विका बोलती गई। 'और लोग जब भी पुनर्जन्म के बारे में सोचते हैं तो वह एक बेहद जटिल सवाल पर आकर रुक जाते हैं : यदि सृष्टि की रचना के समय धरती पर इतने कम लोग थे, और अब उनकी संख्या इतनी ज़्यादा हो गई, तो यह इतनी सारी नई आत्माएँ कहाँ से आईं।'

ब्रीडा साँस रोके उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने कई बार ख़ुद से यही सवाल पूछा था।

‘जवाब आसान है,’ विका कुछ देर लड़की की उत्सुकता भरी ख़ामोशी को महसूस करती रही, और फिर बोली। कई बार पुनर्जन्म लेते व़क्त हमारी आत्मा दो भागों में बँट जाती है। ठीक वैसे ही जैसे क्रिस्टल, सितारे, कोशिकायें और पौधे।

‘हमारी आत्माएँ दो में बँट जाती हैं, और फिर इनमें से हर एक फिर से दो भागों में, और इस तरह कुछ पीढ़ियाँ गुज़रते हम दुनिया के काफ़ी बड़े हिस्से में फैल जाते हैं।’

‘और क्या दोनों में से एक ही भाग अपने पूरक को पहचान सकता है?’ ब्रीडा ने पूछा। उसे ढेरों प्रश्न पूछने थे लेकिन वह उन्हें एक-एक करके पूछना चाहती थी, और इस व़क्त यह सवाल उसे सबसे ज़्यादा अहम लग रहा था।

‘हम सभी ‘एनिमा मुँडी’ यानि विश्व-आत्मा के अंश है। विश्व-गुरुओं द्वारा दिये इस सिद्धान्त के अनुसार, सच यह है कि यदि एनिमा मुँडी केवल विभाजित होती रहे तो वह बढ़ेगी अवश्य, किन्तु साथ ही लगातार क्षीण होती जाएगी।

‘इसीलिये, विभाजित होने के साथ-साथ, हम अपने दूसरे भाग को पहचानते भी हैं, और ख़ुद को पा भी लेते हैं। और ख़ुद को पा लेने की इस प्रक्रिया को ही प्रेम कहते हैं। क्योंकि जब कोई आत्मा दो में विभाजित होती है तो वह हमेशा पुरुष और स्त्री में विभाजित होती है।

‘बुक ऑफ़ जेनेसिस में भी यही व्याख्या है : आदम की आत्मा दो में विभाजित हुई और ईव आदम का ही अंश है।’

विका अचानक रुक गई और मेज़ पर बिखरे टैरो के कार्ड देखती रही।

‘कार्ड बहुत से हैं, लेकिन सब एक ही गड्डी के अंश हैं। दैवी सन्देश को समझने के लिये एक नहीं, सभी कार्ड होने चाहिए, सभी एक जैसे महत्वपूर्ण हैं। और यही आत्माओं के बारे में सच है। सभी इंसान आपस में रिश्तों से बँधे हैं, जैसे ये सभी कार्ड।’

‘हर जन्म में, हमें भीतर से एक अबूझ व अनजाने कर्तव्य का अहसास होता है, कि हमें अपनी आत्मा के कम-से-कम एक अंश की तलाश करनी है। जिस महान प्रेम ने उन्हें जुदा किया था, बाँटा था, वही प्रसन्न हो जाता है जब प्रेम उन्हें वापिस एक-दूसरे से मिला देता है।’

‘लेकिन मुझे कैसे मालूम होगा, कि मेरी सोलमेट कौन है?’ ब्रीडा को अहसास था कि यह उसके जीवन का शायद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न था।

विका हँसने लगी। उसने यही प्रश्न स्वयं से किया था, और इतनी ही उत्सुकता भरी चिन्ता भी रही थी। अपनी सोलमेट को उनकी आँखों की चमक से पहचाना जा सकता था, और

समय के आरम्भ से ही, लोग अपने सच्चे प्रेम को इसी तरह पहचानते आये हैं। चन्द्र परम्परा एक दूसरी प्रकिया का आलम्बन लेती है : एक विशेष दैवी अहसास जिसमें आपकी सोलमेट के बाएँ कन्धे के ऊपर एक छोटा-सा प्रकाश बिन्दु दिखाई देता है।

लेकिन वह लड़की को यह बात अभी नहीं बतायेगी। शायद वह उस प्रकाश बिन्दु को देखना सीख जायेगी, और शायद नहीं। उसे अपना उत्तर शीघ्र ही मिल जायेगा।

'जोखिम तो उठाना पड़ता हैं,' उसने ब्रीडा से कहा। 'हार भी हो सकती है, दिल भी टूट सकता है लेकिन सच्चे प्रेम की तलाश तो जारी रहनी चाहिए। जब तक यह तलाश जारी है, अन्त में जीत तुम्हारी ही होगी।'

ब्रीडा को याद आया कि जादू की राह के बारे में बोलते हुए महागुरु ने भी कुछ ऐसा ही कहा था। 'शायद यह सब एक ही बात है,' उसके मन में ख़याल कौंध गया।

विका मेज से कार्ड समेटने लगी, और ब्रीडा समझ गई कि उसका व़क्त खत्म होने को था। लेकिन अब भी एक प्रश्न तो बाकी था।

'क्या हर जन्म में एक से अधिक सोलमेट भी मिल सकते हैं?'

'हाँ,' विका के मन में कड़वाहट आ घिरी थी। और जब ऐसा होता है तो बदले में दु:ख और पीड़ा मिलते हैं। हाँ, हम तीन या चार सोलमेट्स से भी मिल सकते हैं। क्योंकि हम बहुत से अंशों में बँटे हैं और दुनिया में बिखरे हुए हैं। लड़की सही सवाल पूछ रही थी लेकिन अभी उसे जवाब देने का सही व़क्त नहीं आया था।

'सृष्टि की रचना का सार एक, और सिर्फ़ एक है, और उस सार को ही प्रेम कहते हैं। पूरी दुनिया और कई जन्मों के अनुभवों को समाहित कर एक कर देने वाली शक्ति भी प्रेम ही है। हम पूरी पृथ्वी के लिये उत्तरदायी हो जाते हैं। क्योंकि हम नहीं जानते कि हमारे सोलमेट कहाँ होंगे, जिनकी हम व़क्त की शुरुआत से खोज कर रहे हैं। यदि वे ठीक से हैं, स्वस्थ हैं, तो हम भी ख़ुश होंगे। यदि वे ठीक नहीं, तो चाहे अनजाने में, हमें भी कष्ट होगा।

'लेकिन सबसे अहम बात यह है कि हम हर जन्म में, कम-से-कम एक सोलमेट से मिलने के लिये जिम्मेवार हैं, जो हमारी राह में आयेगा। चाहे कि कुछ पल के लिये ही क्यों नहीं, क्योंकि वे कुछ पल ही अपने साथ इतना गहन प्रेम का अतिरेक लायेंगे कि वह हमारे बाकी बचे जीवन के लिये काफ़ी होगा।'

रसोई में कुत्ता भौंक रहा था। विका ने कार्ड समेट लिये और ब्रीडा को फिर से देखा।

'हम अपनी सोलमेट को अपने पास से गुज़र जाने दे सकते हैं, कि हम न उसे पहचानें, न

स्वीकारें। तब उस सोलमेट को ढूँढने के लिये एक और जन्म लेना होगा। और अपने स्वार्थ के कारण हम ख़ुद को सज़ा में इंसान का बनाया सबसे दुखदायी त्रास देते हैं : अकेलापन।'

विका उठी और ब्रीडा को दरवाजे तक छोड़ने आयी।

'तुम यहाँ अपनी आत्मा के पूरक अंश के बारे में बात करने नहीं आई थीं,' विदा लेने से पहले उसने कहा। 'तुम्हें ईश्वर की देन, उसका गिफ़्ट है, और जब मैं यह जान जाऊँगी कि वह गिफ़्ट क्या है, तब मैं तुम्हें चन्द्र परम्परा का ज्ञान दे पाऊँगी।'

ब्रीडा को अपने स्पेशल होने का अहसास हुआ। उसे इस अहसास की जरूरत थी, क्योंकि इस औरत ने उसके मन में ऐसे आदर भाव जगाये थे जो उसे बहुत कम लोगों के लिये महसूस हुए थे।

'मैं पूरी कोशिश करूँगी। मैं चन्द्र परम्परा सीखना चाहती हूँ।'

'क्योंकि,' वह सोच रही थी, 'चन्द्र परम्परा में अँधेरे जंगल में अकेले रात बिताने की ज़रूरत नहीं।'

'अब ध्यान से सुनो,' विका ने सख्ती से कहा। 'आज से हर दिन अपने चुने हुए समय पर, मेज पर अकेले बैठ टैरो के कार्ड अपने सामने छितरा दो, जैसे मैंने किया था, एकदम बेतरतीब। कुछ भी समझने की कोशिश मत करो। सिर्फ़ पत्तों को ध्यान से देखो। वे तुम्हें वह सब सिखा देंगे जो तुम्हें फिलहाल सीखने की ज़रूरत है।'

'यह सूर्य परम्परा जैसे ही है : मुझे ही ख़ुद को सिखाना है,' ब्रीडा ने सीढ़ियाँ उतरते हुए सोचा। और बस में बैठने के बाद ही उसे याद आया कि औरत ने गिफ़्ट का, ईश्वर की देन का ज़िक्र किया था। लेकिन इसकी बात तो अब अगली बार मिलने पर ही हो सकेगी।

अगला पूरा सप्ताह, ब्रीडा हर रोज आधा घण्टा टैरो के कार्ड लगाती और उन्हें समझने की कोशिश करती। रात को दस बजे सो जाना, और फिर अलार्म बजने पर रात के एक बजे उठ जाना। एक कप कॉफ़ी और फिर काईस पर ध्यान लगाना। उनमें छिपे रहस्यों को समझने की कोशिश करना।

पहली रात वह काफी उत्तेजित थी। ब्रीडा को विश्वास था कि विका ने उसे कोई रहस्यमयी रिचुअल, या अनुष्ठान सिखा दिया था, और इसलिये उसने काईस को ठीक उसी तरह छितराने की कोशिश की कि इससे कोई जादुई सन्देश प्रकट हो जायेगा। आधे घण्टे बाद भी, सिवा कुछ मामूली दर्शनों के, जो ब्रीडा को लगा कि उसकी कल्पनाशक्ति का ही प्रकट रूप थे, और कुछ न हुआ।

दूसरी रात भी ठीक ऐसा ही हुआ। विका ने कहा था कि कार्ड अपनी कहानी ख़ुद बतायेंगे और जो कोर्स ब्रीडा ने किये थे उनके मुताबिक भी, वह कहानी बेहद प्राचीन थी। लगभग तीन हजार बरस पुरानी, उस व़क्त की, जब हम आदिकालीन ज्ञान के साथ निकट सम्पर्क में थे।

'तस्वीरें कितनी आसान दिखाई देती हैं,' वह सोच रही थी। एक औरत, एक बबर शेर का जबड़ा जबरन खोलती हुई, दो रहस्यमयी जानवर एक बग्गी को खींचते हुए, मामूली चीजों से भरी एक मेज के सामने बैठा हुआ एक आदमी।

उसे पढ़ाया गया था कि टैरो का डॅक एक किताब की मानिन्द होता है, एक ऐसी किताब जिसमें दैवी ज्ञान ने हमारी जीवन यात्रा में आने वाले मुख्य परिवर्तन ढाल दिये थे। लेकिन वह लिखने वाला जानता था कि इंसान अच्छाई से नहीं, बुराई से सीखते हैं और इसलिये उसने इस पवित्र ग्रंथ में छिपा ज्ञान एक खेल के माध्यम से देना तय किया था। टैरो का डॅक देवताओं का आविष्कार था।

'इतना आसान तो नहीं हो सकता।'

ब्रीडा जितनी बार कार्ड लगाती, उतनी ही बार सोचती। उसे कार्ड लगाने के कई जटिल तरीके सिखाए गये थे और इस तरह से उन्हें बेतरतीब छितराना उसकी समझ पर गलत असर डालने लगा। तीसरी रात उसने झुँझला कर कार्ड जमीन पर पटक दिये। लेकिन अब भी परिणाम मामूली ही थे, कुछ अस्पष्ट अहसास, जिन्हें उसने फिर से, अपनी कल्पना समझ ठुकरा दिया।

लेकिन इस सब के दौरान, अपने सोलमेट का विचार उसे एक पल को भी न भूला। पहले पहल उसे लगा कि वह अपने बचपन में वापिस जा रही थी, जब एक जादुई प्रेम के वश राजकुमार पर्वतों व घाटियों को लाँघता हुआ अपनी सोई राजकुमारी को चूम कर जगाने आन पहुँचता है, या निशानी के तौर पर काँच की जूती उठाये अपनी राजकुमारी को दूरों दूर तक तलाशता है। 'सोलमेट को पा लेना केवल परियों की कहानियों में होता है,' उसने ख़ुद को शायद मज़ाक में ही समझाया था। परी कथाएँ ही उसका उस जादुई दुनिया का पहला अनुभव था जिसमें जाने के लिये अब वह इतनी उतावली थी, और कई बार उसके मन में यह सवाल उठा था कि जिस दुनिया से हमें बचपन में इतनी ख़ुशी, इतना आनन्द मिला, उसे हम बड़े हो ख़ुद से दूर क्यों कर देते हैं।

'शायद क्योंकि लोग ख़ुशी से सन्तुष्ट नहीं रहते।' उसे यह विचार काफी अटपटा लगा लेकिन फिर भी उसने इसे अपनी डायरी में एक 'क्रिएटिव' विचार के तौर पर दर्ज किया।

'सोलमेट' पर बेहिसाब सोचने के एक सप्ताह बाद ब्रीडा पर यही भयानक विचार हावी हो गया कि यदि उसने गलत इंसान को चुन लिया, तब क्या होगा? आठवीं रात जब वह फिर

से टैरो के कार्ड समझने की फिजूल कोशिश को उठी, तो उसने अगली रात अपने बॉयफ्रेंड को डिनर पर बुलाने का फैसला किया।

उसने काफ़ी किफ़ायती रेस्तराँ चुना क्योंकि उसका बॉयफ्रेंड बिल चुकाने पर अड़ जाता था चाहे कि वह उससे कहीं कम कमाता था। वह यूनिवर्सिटी में भौतिकी के प्रोफ़ेसर का रिसर्च असिस्टेंट था जबकि ब्रीडा सेक्रेटरी के तौर पर अच्छा कमा लेती थी। गर्मियाँ अभी ख़त्म न हुई थीं और वह नदी किनारे पेवमेंट पर लगी एक मेज़ पर बैठे थे।

'मैं जानना चाहूँगा कि आत्माएँ हमें कब दोबारा साथ सोने की इजाज़त देने वाली हैं,' लोरेन्स ने मुस्कुरा कर पूछा।

ब्रीडा ने उसे सहलाती आँखों से देखा। उसने लोरेन्स को दो सप्ताह घर आने से मना किया था और वह मान भी गया था, बस इतने ऐतराज़ के साथ ताकि ब्रीडा को मालूम रहे कि वह उसे कितना प्यार करता था। अपने तरीके से वह भी सृष्टि के रहस्य जानने की कोशिश कर रहा था, और कभी, यदि उसने ब्रीडा से दो सप्ताह दूर रहने को कहा, तो उसे भी मानना होगा।

उन्होंने बिना जल्दी किये, आराम से, और ज़्यादातर चुप्पी में ही डिनर किया। वे कश्तियों को नदी पार करते और पेवमेंट पर आते जाते लोगों को देखते रहे। मेज पर रखी वाइन की बोतल खाली हुई, और उसकी जगह एक और बोतल ने ले ली। आधे घण्टे बाद उन्होंने अपनी कुर्सियाँ नज़दीक खिसका लीं थीं और वे एक-दूसरे की बाहों में घिरे ऊपर सितारों भरा गर्मियों का आकाश देख रहे थे।

'आकाश को देखो भला,' लोरेन्स उसके बाल सहला रहा था। 'जो हम अब देख रहे हैं, वह वो आकाश है जो हज़ारों वर्षों पहले हुआ करता था।'

उसने यही बात उस दिन कही थी जिस दिन वे पहली बार मिले थे, लेकिन ब्रीडा ने उसे टोका नहीं। अपनी दुनिया ब्रीडा से बाँटने का यह लोरेन्स का तरीका था।

'उन सितारों में से कई अब तक मर चुके हैं और उनकी रोशनी सृष्टि में अब भी फैली है। बहुत-से और सितारे बहुत दूर पैदा हुए और उनकी रोशनी अब तक, हम तक पहुँची नहीं।'

'तो कोई नहीं जानता, कि असली आकाश कैसा दिखता है? ब्रीडा ने यही सवाल उस पहली बार भी पूछा था, लेकिन ऐसे मीठे पल दोहराने अच्छे लगते थे।

'हम यह नहीं जानते। जो दिखाई देता है, उसे ही समझने की कोशिश करते हैं लेकिन जो दिखाई देता है, ज़रूरी नहीं कि वह सचमुच हो।'

‘मैं कुछ पूछना चाहती हूँ। हम किससे बने हैं? वे अणु, जिनसे हम बने हैं, वे कहाँ से आये?’

लोरेन्स ने सिर उठा प्राचीन आकाश को देखा और कहा :

‘वे इन्हीं सितारों और इस नदी के साथ ही बने थे। सृष्टि की रचना के पहले पल में।’

‘तो सृष्टि की रचना के पहले पल के बाद उसमें और कुछ नहीं बना, न जोड़ा गया।’

‘हाँ, कुछ भी नहीं। सब चलायमान हुआ और अब भी गति में है। सब कुछ एक साथ परिवर्तन में आया, और आज भी परिवर्तनशील है। लेकिन वे सभी पदार्थ, जो आज सृष्टि में है, वही पदार्थ हैं जो अरबों ख़रब बरस पहले थे, और एक अणु तक भी उसमें जोड़ा न गया है।’

ब्रीडा बैठी सितारों का चलना देखती रही। धरती पर बहती नदी को देखना आसान था, लेकिन आकाश में सितारों की गति पकड़ पाना आसान न था।

‘लोरेन्स,’ आखिर में, एक लम्बी चुप्पी के बाद ब्रीडा बोली। इतनी देर वे एक कश्ती को नदी पार करते देखते रहे थे। ‘शायद जो मैं पूछने वाली हूँ, तुम्हें अटपटा सवाल लगे : क्या यह जिस्मानी तौर पर मुनासिब है कि जिन अणुओं से मेरी देह बनी है, वे मुझसे पहले, किसी और की देह में थे,जो मुझसे पहले के व़क्त में जिया हो?’

लोरेन्स भौंचक्का हो उसे देख रहा था। ‘क्या मतलब?’

‘जो मैंने कहा। क्या ऐसा सम्भव है?’

‘वे पौधों में या कीट-पतंगों में हो सकते हैं, या वे हीलियम के नन्हें कणों में बदल कहीं बहुत दूर भी हो सकते हैं, पृथ्वी से अरबों मील दूर।’

‘लेकिन क्या यह सम्भव है कि किसी और के शरीर को बनाने वाले अणु, उसके मरने के बाद मेरे शरीर में आ जायें और किसी दूसरे के शरीर में भी?’

एक पल को वह कुछ न बोला, फिर उसने कहा—

‘हाँ, यह सम्भव है।’

दूर से आते संगीत की धुन उन तक पहुँच रही थी। वह नदी पार करती एक बड़ी कश्ती से आ रही थी, और इतनी दूर होने के बावजूद ब्रीडा एक खिड़की में खड़े नाविक की आकृति देख सकती थी। वह धुन उसे अपने लड़कपन की याद दिला रही थी,स्कूल में नाचे गये डाँस, अपने सोने के कमरे की ख़ास ख़ुशबू, उस रिबन का रंग जिससे वह अपने बाल बाँधती थी।

ब्रीडा समझ गई कि जो सवाल उसने अभी पूछा था, लोरेन्स ने आज से पहले उसके बारे में कभी न सोचा न था, और शायद उस पल भी वह उन सभी चीज़ों के बारे में सोच रहा था जिनके अणु इस व़क्त उसकी देह में हो सकते थे। वाईकिंग योद्धा, ज्वालामुखी के विस्फोट, या शायद पराऐतिहासिक विशाल डायनोसॉर, जो अचानक और रहस्यमयी तरीके से लुप्त हो गये थे।

लेकिन ब्रीडा के ख़याल कहीं और भटक रहे थे। वह सिर्फ़ यह जानना चाहती थी : जिस मर्द ने उसे इतने प्यार से गले लगाया था, क्या वह कभी उसी का अंश रहा था?

कश्ती और नज़दीक आ गई थी और उसका संगीत उसके चारों ओर की हवा को भरने लगा था। बाकी मेज़ों पर भी बातें थम गई थीं, हर कोई यह जानने को उत्सुक कि वह संगीत कहाँ से आ रहा था, क्योंकि हर कोई उस लड़कपन से गुजरा था, स्कूल के डाँस में शामिल हुआ था, और हर किसी ने योद्धाओं और परियों की कहानियों भरे सपने देखे थे।

'मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, लोरेन्स।'

और उम्मीद न होते हुए भी ब्रीडा उम्मीद कर रही थी कि इस नौजवान में, जो सितारों की रोशनी के बारे इतना कुछ जानता था, कुछ अणु ब्रीडा की देह के ही थे, किसी पिछले जन्म से।

'कोई फायदा नहीं, यह मुझसे नहीं होता।'

ब्रीडा बिस्तर में उठ बैठी और सिरहाने की मेज पर रखे सिगरेट के पैकेट को टटोला। अपनी सभी आदतों के ख़िलाफ़ उसने सुबह के नाश्ते से पहले सिगरेट पीने का फैसला किया।

विका से दोबारा मिलने में अभी दो दिन बाकी थे। वह जानती थी कि पिछले दो सप्ताह उसने जी-तोड़ मेहनत की थी। उसने अपनी सारी उम्मीदें टैरो के कार्ड सही तरीके से छितराने पर टिका दी थीं, जो उसे उस आकर्षक और रहस्यमयी औरत ने सिखाया था। ब्रीडा ने पूरी कोशिश की थी कि वह विका को निराश न करे, लेकिन कार्ड अपने रहस्य खोलने में न आ रहे थे।

पिछली तीन रातों से अपनी कोशिशें ख़त्म करने पर उसे बहुत रोना आया था। वह कमज़ोर और अकेला महसूस कर रही थी और उसे लग रहा था कि एक महान अवसर उसकी अँगुलियों में से निकला जा रहा था।

उसने महागुरु मेगस के बारे में सोचा। शायद वे उसकी मदद कर सकें। लेकिन उसने ख़ुद से वादा किया था कि वह जंगल वापिस तभी जाएगी जब वह जादू के बारे में इतना जान

जायेगी कि उनका सामना कर सके।

और अब ऐसा लग रहा था ज्यों वह कभी न होगा।

अन्त में उसने पूरी हिम्मत जुटा कर एक और 'रोज़ाना की काली रात' का सामना करने का इरादा बना डाला। जंगल में बिताई उस काली रात की याद में उसने इन रातों का नाम भी यही रख डाला था।

वह किताबों की दुकान के मालिक द्वारा दिये गये कागज़ को ढूँढने लगी। ख़ुद को दिलासा देने को उसने सोचा : और भी रास्ते हैं। वह महागुरु मेगस से मिली थी, फिर विका से, और फिर अन्त में, वह उस इंसान से मिलेगी जो उसे ऐसे तरीके से समझा पायेगा जो उसे समझ आयेगा।

लेकिन वह जानती थी कि यह सिर्फ़ एक बहाना था।

'मैं हमेशा चीज़ों को शुरू करती हूँ और फिर उन्हें छोड़ देती हूँ,' वह ख़ुद से काफ़ी चिढ़ी हुई सोच रही थी। शायद जिंदगी जल्द ही यह बात समझ जायेगी और उसे बार-बाद ऐसे अवसर देने बन्द कर देगी। एक भी कदम बिना लिये उसने शुरुआत से ही अपने सभी रास्ते ख़त्म कर लिए थे।

लेकिन वह थी तो ऐसी ही, और उसे लग रहा था कि धीरे-धीरे और कमज़ोर होती जा रही थी, न ही उसमें ख़ुद को बदलने की ताकत बची थी।

कुछ — एक साल पहले अपने बर्ताव से काफ़ी दुखी हो जाती वो, पर फिर भी कहीं एक-आधा कुछ ज़बरदस्त भी कर डालती; लेकिन अब वो अपनी ग़लतियों के साथ ढलने लगी थी। उसने विका को बिना फ़ोन किये गायब हो जाने की सोची, लेकिन फिर किताबों की दुकान का क्या? फिर वहाँ जाने की हिम्मत नहीं कर पाती। 'ऐसा पहले भी हो चुका है। किसी एक की तरफ़ बिना सोचे-विचारे उठाया हुआ एक कदम, और ऐसे मैंने उन कई लोगों को खो दिया जिनकी मुझे सचमुच परवाह थी।' अब वो दोबारा ऐसा नहीं कर सकती थी। इस राह में रास्ता दिखाने वाले मददगार बहुत मुश्किल से मिलते थे।

उसने मन कड़ा कर के काग़ज़ पर लिखा नम्बर मिलाया। विका ने फ़ोन उठाया।

'मैं कल नहीं आ पाऊँगी,' ब्रीडा ने कहा।

'हाँ, कल प्लम्बर भी नहीं आ सकता,' विका ने जवाब दिया। एक पल को ब्रीडा समझ नहीं पायी कि यह औरत कह क्या रही है।

और फिर विका रसोई में बर्तन साफ़ करने के सिंक और पुरानी इमारतों में नालियाँ रुक

जाने की एक लम्बी दास्तान सुनाने लगी कि कैसे उसने प्लम्बर को कई बार बुलाया था मगर देखने में शानदार इमारतों में ऐसी परेशानियाँ आये दिन देखने को मिल जाती हैं।

फिर अपनी कहानी के बीचों-बीच विका ने अचानक पूछा :

'तुम्हारे टैरो के कार्ड आस-पास हैं क्या....?'

हैरान, ब्रीडा ने कहा कि हाँ, वे पास में ही थे।

विका ने उसे मेज़ पर कार्ड फैलाने को कहा, कि वह उसे यह जानने का तरीका सिखाने वाली थी कि अगले दिन प्लम्बर आने वाला था या नहीं।

और भी हैरान, ब्रीडा ने मेज पर कार्ड फैलाये और मेज़ पर खाली नजरें टिकाये फ़ोन पर अगले निर्देश का इन्तज़ार करती बैठी रही। अपने फ़ोन करने की वजह बताने का साहस धीरे-धीरे फ़ना होता जा रहा था।

विका अभी भी बोलती जा रही थी और ब्रीडा ने उसकी बात आराम से सुनने का फैसला किया। शायद वह उसकी दोस्त ही बन जाये। तब शायद वह और नर्म पड़ जाये और उसे चन्द्र परम्परा समझने के कुछ और आसान तरीके बता सके।

इस दौरान विका बिना रुके एक कहानी के बाद दूसरी और तीसरी कहानी एक-दूसरे में पिरो रही थी। प्लम्बरों के बारे में अपनी लम्बी गाथा सुनाने के बाद वह मैनेजर से चौकीदार की तऩख्वाह के बारे में हुई बहसबाज़ी बता रही थी और उसके बाद वृद्धावस्था में पेंशन के बारे में पढ़ी एक रिपार्ट के बारे में बताने लगी।

ब्रीडा इस पूरी बातचीत के दौरान हाँ-हूँ करती रही, हर बात पर हामी भरती रही पर अब उसने सुनना बन्द कर दिया था। उस पर बेहद भारी धीमापन आ घिरा। प्लम्बरों, चौकीदारों और पेंशनों पर ये घुमावदार बातें, वे भी एक ऐसी औरत के साथ जिसे वह जानती न थी — ज़िन्दगी की सबसे बोरियत भरे अनुभवों में से थी। वह बार-बार सामने फैले कार्ड देखती रही, और उनमें अब वे छोटी और बारीक ख़ूबियाँ दिख रही थीं जो उसे पहले कभी न दिखी थी।

बीच-बीच में विका पूछ लेती थी कि क्या वह सुन रही थी, और वह एक छोटी-सी हामी भर देती थी। लेकिन उसका ध्यान मीलों दूर था, ऐसी जगहों में धूमता, जहाँ वह पहले कभी न गई थी। काईस पर छपी बारीकियों में से हर एक उसे उस यात्रा पर और आगे धकेल रही थी।

अचानक, जैसे कोई किसी सपने में जा पहुँचे, ब्रीडा को महसूस हुआ कि उसे अब विका की

आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। एक और आवाज़ जो उसके अन्दर से आती लग रही थी — लेकिन जो वह जानती थी कि बाहर से आ रही थी — उसके कान में फुसफुसाने लगी। 'समझ रही हो?' ब्रीडा ने हामी भरी। 'समझ रही हो न?' उस रहस्यमयी आवाज़ ने फिर पूछा।

लेकिन यह इतनी ख़ास बात न थी। सामने छितरे टैरो कार्ड उसे फंतासी भरे दृश्य दिखाने लगे : कांसे के रंग की तेल से चमक रही देहों वाले मर्द, केवल लंगोट पहने, जिन्होंने विशाल मत्स्य आकृतियों के मुखौटे पहने हुए थे। आकाश के पार बादल भाग चले, जैसे हर कुछ असाधारण गति से चलायमान था, और फिर अचानक दृश्य एक शहर के चौक में जा बदला, चारों ओर इमारतों से घिरा, जहाँ कुछ बूढ़े बुज़ुर्ग एक लड़कों के समूह को कुछ रहस्य बता रहे थे, कोई समय के पार का प्राचीन ज्ञान जो बस अभी न बताया गया तो हमेशा के लिये लुप्त हो जायेगा।

'सात और आठ जोड़ो तो तुम्हें मेरा नम्बर मिल जाएगा। मैं ख़ुद हूँ, प्रकट, शैतान — मैंने ही किये उस किताब पर हस्ताक्षर,' मध्ययुगीन पोशाक में एक लड़के ने ऐलान किया, जो शायद किसी उत्सव में शामिल था। मदिरा में झूम रहे मर्द और औरतें टैरो से बाहर झाँक ब्रीडा पर मुस्कुरा रहे थे।

दृश्य फिर बदला, इस बार समन्दर पर, कि चट्टानों को तराश काटे गये मन्दिर प्रकट हुए, और फिर आकाश को काले बादल ढकने लगे, जिनको बार-बार बिजली चीर जाती थी।

और फिर एक दरवाज़ा प्रकट हुआ। एक भारी भरकम दरवाज़ा ज्यों किसी पुराने महल का। दरवाज़ा ब्रीडा के नज़दीक आने लगा, और उसे लगा कि बहुत जल्द वह उसे खोल पायेगी।

'वापिस आओ,' आवाज़ आयी।

'वापिस आओ,' फ़ोन में से आवाज़ ने कहा। विका की आवाज़। ब्रीडा झुँझला गई थी कि इतने ख़ास अहसास को तोड़ वो उसे फिर चौकीदारों और प्लम्बरों की बातों से बोर करना चाहती थी।

'बस एक मिनट,' उसने कहा। वह उस दरवाज़े को फिर से वापिस लाने की कोशिश कर रही थी पर सब गायब हो चुका था।

'मैं जानती हूँ क्या हुआ,' विका ने उससे कहा। ब्रीडा धक् से रह गई। वो समझ न पा रही थी कि क्या हो रहा था।

'मैं जानती हूँ क्या हुआ,' विका ने फिर कहा। मैं प्लम्बर के बारे में और कुछ नहीं कहूँगी, वह पिछले हफ़्ते आ कर सब ठीक कर चुका है।'

फ़ोन रखने से पहले उसने कहा कि वह निश्चित समय पर ब्रीडा का इन्तज़ार करेगी। ब्रीडा ने बिना कुछ कहे फ़ोन रख दिया। वह बहुत देर तक रसोई की दीवार को ताकती रही और आखिरकार सुकून के आँसू छोटी-छोटी सुबकियों भरी रुलाई में बहने लगे।

'कभी-कभी ऐसा करना पड़ता है, यानि जो मैंने उस दिन किया,' विका ने डर से सहमी ब्रीडा को कहा, जब वे फिर से इटैलियन कुर्सियों में बैठ गये।

'जानती हूँ कि तुम्हें कैसा लग रहा होगा। कई बार हम किसी राह सिर्फ़ इसलिये चल देते हैं क्योंकि हम उसमें विश्वास नहीं रखते। आसान है ऐसा करना। तब सिर्फ़ यह सिद्ध करना रह जाता है कि वह हमारे लिये सही रास्ता नहीं है। लेकिन जब चीज़ें होनी शुरू होती हैं और राह हमारे लिये ख़ुद को खोल देती है, हम आगे चलने से डर जाते हैं।'

विका बोली कि वह यह कभी समझ न पायी कि क्यों इतने लोग अपनी पूरी ज़िन्दगी उन राहों को तोड़ने में लगा देते हैं जिन पर उन्हें चलना भी नहीं होता जबकि उन्हें उस एक राह चलना चाहिए जो उन्हें कहीं पहुँचा सकती है।

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह तुम्हारी ही चाल थी,' ब्रीडा का मन मानने को तैयार नहीं था। उसका ज़िद्दी और घमण्डी दिखने वाला नज़रिया काफ़ूर हो चुका था। साथ ही विका के लिये उसकी इज़्ज़त कई गुणा बढ़ गई थी।

'न, न, वे अद्‌भुत दृश्य कोई चाल नहीं थे।'

'मैं फ़ोन के इस्तेमाल की बात कर रही हूँ। लाखों बरस हम सिर्फ़ उन लोगों से बात कर सकते थे जिन्हें हम देख सकते थे। और फिर, एक सदी से भी कम व़क्त में, ''देखना'' और ''बात करना'' अचानक अलग कर दिये गये। हम इसे आम बात मानते हैं और हमारी प्रतिक्रियाओं पर इसके प्रभाव को महत्व नहीं देते। हमारे शरीर को अब भी इसकी आदत नहीं पड़ी है।

'इसका साक्षात प्रभाव यह है कि जब हम फ़ोन पर बात करते हैं तो अक्सर एक ट्रांस या जादुई मोहावस्था जैसी स्थिति में पहुँच जाते हैं।'

हमारा मन किसी और अवस्था में पहुँच जाता है और उसका अदृश्य दुनिया के प्रति अधिक रुझान हो जाता है। मैं उन कई जादू की उपासिकाओं को जानती हूँ जो फ़ोन के पास हमेशा कलम और काग़ज़ रखती हैं और जब भी किसी से बात करती हैं तो साथ-साथ काग़ज़ पर बिना सोचे बेतरतीब आकृतियाँ बनाती रहती हैं। फ़ोन रखते ही वे देखती हैं कि देखने में ''बेमतलब'' आकृतियाँ अक्सर चन्द्र परम्परा के महत्वपूर्ण प्रतीक होते हैं।

‘लेकिन टैरो ने मुझे वे दृश्य दिखाये ही क्यों?’

‘जो भी जादू सीखना चाहते हैं उनके साथ यही एक सबसे बड़ी समस्या है,’ विका ने जवाब दिया। ‘जब हम किसी राह पर निकलते हैं, हमें काफ़ी साफ़ अन्दाज़ा होता है कि हम क्या पाने की उम्मीद रखते हैं। औरतें ज़्यादातर अपनी सोलमेट ढूँढ रही होती हैं, और मर्द दूसरों पर ताकत। सीखने में दिलचस्पी दोनों को ही नहीं होती। वे बस वो हासिल कर लेना चाहते हैं जिस पर उन्होंने अपना दिल टिका लिया होता है।

‘लेकिन जादू की राह-जीवन की राह की मानिन्द ही — रहस्य से भरी रही है और सदा ही रहेगी। कुछ सीखने का अर्थ है एक ऐसी दुनिया के साथ सम्पर्क में आना जिसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते। और सीखने के लिये अपने अहं को त्यागना होता है।’

‘जैसे काली अँधेरी रात में छलाँग,’ ब्रीडा बोली।

‘बीच में मत बोलो।’ विका की आवाज़ में मुश्किल से दबाई गई चिड़चिड़ाहट थी, लेकिन ब्रीडा समझ गई कि वह उसके कहे से नाराज़ न थी । ‘शायद वह महागुरु मेगस से नाराज़ है,’ वह सोच रही थी। ‘शायद यह कभी उनसे प्रेम में थी। दोनों लगभग एक ही उम्र के हैं।’

‘सॉरी,’ वह बोली।

‘ठीक है।’ विका भी अपने चिढ़ जाने पर उतनी ही हैरान थी।

‘तुम मुझे टैरो के बारे में बता रही थीं।’

‘जब तुम कार्ड फैलाती थीं तो तुम्हारा मन पूर्वाग्रहों से भरा होता था। तुमने काईस को कभी अपनी कहानी बताने का मौका न दिया, तुम उनसे उस सब की पुष्टि करवाना चाहती थी जो तुम सोचती थीं कि तुम्हें मालूम है।

‘जब हम फोन पर बात करने लगे, तब मैं यह समझ गई। मैं यह भी समझ गई कि यह मेरे लिये एक संकेत था और कि इसमें फ़ोन मेरा सहायक होगा। तो मैंने एक निहायत ऊबाऊ बात शुरू की और तुम्हें टैरों के कार्ड देखने को कहा। तुम उस फ़ोन की वजह से एक मोहावस्था में चली गईं और टैरो तुम्हें अपनी जादुई दुनिया में ले गये।’

विका ने सुझाव दिया कि अगली बार जब वह किसी ऐसे के साथ हो जो फ़ोन पर बात कर रहा हो, तो उसकी आँखें ध्यान से देखे। जो दिखाई देगा वह उस पर हैरान रह जायेगी।

‘मैं कुछ और पूछना चाहती हूँ।’ ब्रीडा और विका उसकी हैरान कर देने वाली मॉडर्न लेकिन

कामकाजी रसोई में चाय पी रहे थे। 'मैं जानना चाहती हूँ कि तुमने मुझे राह छोड़ने क्यों नहीं दी।'

'क्योंकि,' विका ने सोचा, 'मैं जानना चाहती हूँ कि मेगस ने तुममें क्या देखा, तुम्हारी ईश्वरीय देन के सिवा।' लेकिन उसने कहा, 'क्योंकि तुम्हारे पास ईश्वर की देन है। और यह मुझे तुम्हारे कानों से मालूम हुआ।'

'मेरे कानों से! यह तो दिल ही तोड़ने वाली है!' ब्रीडा ने ख़ुद से कहा। और कहा 'मैं सोच रही थी कि यह मेरा प्रकाशपुंज, मेरा 'औरा' देख सकती थी।'

'हर किसी के पास ईश्वर की देन है, लेकिन कुछ के पास यह जन्म से ही बेहद रोशन होती है और इसकी पहचान यह है कि उनके कान छोटे और सिर से चिपके हुए होते हैं।'

स्वभाव से, तुरन्त ही ब्रीडा ने अपने कान छुए। यह सच था।

'तुम्हारे पास कार है?'

'नहीं।'

'तब टैक्सी के भाड़े पर ढेरों खर्च के लिये तैयार हो जाओ,' विका ने उठते हुए कहा। 'हमारे अगले कदम का व़क्त हो गया है।'

'अब तो सब अचानक बहुत तेज़ी से हो रहा है,' ब्रीडा ने उठते हुए सोचा। जीवन उन्हीं बादलों-सा तेज़ी से भाग रहा था जो उसने अपने ट्रांस में देखे थे।

बीच दोपहर तक वे डब्लिन के दक्षिण में करीब पंद्रह मील दूर पहाड़ों तक जा पहुँचे थे। 'यहाँ तो बस से भी आ सकते थे,' ब्रीडा टैक्सी का भाड़ा देते हुए मन-ही-मन खीझ रही थी।

विका अपने साथ एक बैग और कुछ कपड़े लायी थी।

'चाहो तो इन्तज़ार कर सकता हूँ,' ड्राइवर बोला। 'इन इलाकों में टैक्सी ढूँढना काफ़ी दुश्वार हो सकता है। दूर-दूर तक आबादी का नाम नहीं।'

'फ़िक्र न करो,' विका ने कहा। 'हम जो चाहते हैं, हमें मिल ही जाता है।' ब्रीडा की साँस में साँस आयी।

ड्राइवर ने उन्हें अजीब तरीके से देखा और चला गया। वे पेड़ों के झुरमुट के आगे खड़े थे जो सबसे पास के पहाड़ की तलहटी तक फैला था।

‘प्रवेश करने की इज़ाजत माँगो,’ विका बोली ‘जंगलों की आत्माएँ सदा ही अच्छा व्यवहार पसन्द करती हैं।’

ब्रीडा ने इज़ाजत माँगी। जंगल, जो अब तक मामूली जंगल था, मानो जीवित हो उठा।

‘दृश्य और अदृश्य दुनिया के बीच के पुल पर ही रहो,’ पेड़ों के बीच चलते हुए विका न कहा। ‘सृष्टि में हर कण में प्राण हैं, और तुम्हें सदा ही उस प्राण के सम्पर्क में रहने की कोशिश करनी है। वह तुम्हारी भाषा समझता है। और तुम्हारे लिये इस संसार के अर्थ बदलने लगेंगे।’

ब्रीडा विका की फ़ुर्ती पर हैरान थी। चाल इतनी तेज़ और लचीली कि पैर ज्यों जमीन पर पड़ ही न रहे थे, और न ही कोई आवाज़। वे एक बहुत बड़े पत्थर के पास छोटी-सी खुली ज़मीन पर पहुँचे। जबकि ब्रीडा यह सोच रही थी कि वह विशाल पत्थर वहाँ कैसे पहुँचा होगा, उसे वहाँ बीचोंबीच जली आग की राख के निशान दिखाई दिये।

जगह सुन्दर थी। साँझ ढलने में अभी भी कुछ घण्टे बाकी थे और सूरज गर्माहट भरी ग्रीष्म दोपहरी की सुनहरी धूप से चमक रहा था। परिन्दे गा रहे थे, और पत्तों के बीच हल्की हवा सरसरा रही थी। वे अब पहाड़ों में काफ़ी ऊँचे आ गये थे और वह वहाँ से नीचे क्षितिज को देख सकती थीं।

विका ने अपने बैग से एक तरह का लबादा निकाला और उसे अपने कपड़ों के ऊपर पहन लिया। फिर उसने अपने बैग को कगार के पेड़ों में छिपा दिया ताकि वह दिखाई न दे।

‘बैठो,’ उसने ब्रीडा से कहा।

अब विका कुछ बदल-सी गई थी। ब्रीडा समझ न पायी कि वह लबादे की वजह से था या उस जगह से उठ रही गहरी इज्ज़त की वजह से।

‘सबसे पहले मैं बता दूँ कि मैं क्या करने जा रही हूँ। मैं यह पता लगाने वाली हूँ कि ईश्वर की देन तुम में किस तरह प्रकट है। मैं तुम्हें तभी सिखाना आरम्भ कर सकती हूँ जब मुझे तुम्हारी देन के बारे में कुछ मालूम हो जायेगा।’

विका ने ब्रीडा को रिलैक्स कर ख़ुद को ढीला छोड़ देने को कहा, कि वह ख़ुद को उस जगह की ख़ूबसूरती के प्रति खोल दे, ठीक वैसे जैसे उसने टैरो के कार्ड देखते समय किया था।

‘अपने पूर्व जन्मों में से किसी एक में कभी तुमने जादू की राह चली थी। यह मुझे तुम्हारे टैरो से जगे दृश्यों के वर्णन से मालूम है।’

ब्रीडा ने आँखें मूँद ली लेकिन विका ने उसे आँखें खोल लेने को कहा।

‘जादुई स्थल सदा ही ख़ूबसूरत होते हैं और उन्हें ध्यान से देखना और ख़ुद में ढाल लेना चाहिए। झरने, पर्वत और घने जंगलात, सभी ऐसे स्थल हैं जहाँ धरती की आत्माएँ हँसती, खेलती और हमसे बात करती हैं। तुम एक पवित्र स्थल में हो और वह तुम्हें पंछी और हवाएँ दिखा रहा है। इसके लिये ईश्वर का धन्यवाद करो। सदा ही दृश्य और अदृश्य संसारों के बीच के पुल पर रहो।’

विका की आवाज़ ब्रीडा को धीरे-धीरे शिथिल बनाती जा रही थी। उसे इस पल के लिये बरबस धार्मिक-सा ही सम्मान जग उठा था।

‘उस दिन मैंने तुमसे जादू के महान रहस्य यानि आत्मा के पूरक अंश, या सोलमेट की बात की थी। इस धरती पर मनुष्य के पूरे जीवन को इस सोलमेट की तलाश में समेटा जा सकता है। वह चाहे ज्ञान, पैसा या दुनियाई ताकत के पीछे भागने का ढोंग करे, लेकिन इनमें से किसी के भी मायने नहीं है। वह जो भी हासिल करे, वह अधूरा रहेगा यदि वह अपने सोलमेट को न पा सके।

‘सिर्फ़ कुछ अपवादों को छोड़, जो फ़रिश्तों से जन्मे हैं और जिन्हें ईश्वर पाने के लिये एकान्त चाहिए होता है — बाकी इंसानी कौम तभी ईश्वर से एक हो सकती है जब किसी व़क्त, अपने जीवन के किसी पल में, वह अपने पूरक अंश से मिल सके।’

ब्रीडा को अहसास हुआ कि हवा में एक अजब ऊर्जा थी। कुछ पल के लिये, और न जाने क्यों, उसकी आँखें भर आईं।

‘व़क्त की रात में, जब हम जुदा थे, उनमें से एक अंश यानि मर्द को प्राचीन ज्ञान की परम्परा को बढ़ाने व उसे कायम रखने का काम हिस्से आया। तो उसने खेती, प्रकृति और आकाश में सितारों की गति को समझना सीखा। सृष्टि को अपने स्थान पर स्थित रखना तथा सितारों को उनकी पथ प्रदक्षिणा की गति देना ज्ञान की ताकत से ही सम्भव हुआ है। यही इंसान का अप्रतिम उत्कर्ष था — ज्ञान की सुरक्षा तथा संवहन। और यही कारण है कि सम्पूर्ण मानव जाति जीवित रही है।

‘औरत को कहीं अधिक सूक्ष्म, अस्पृश्य और झीना काम दिया गया, लेकिन जिसके बिना ज्ञान का कोई अर्थ नहीं, और वह था रूपान्तरण। मर्द धरती को उपजाऊ छोड़ते थे, हम बीज डालते थे और फिर मिट्टी पेड़ों और पौधों के रूप में ढल जाती थी।

‘मिट्टी को बीज चाहिए और बीज को मिट्टी। एक का अर्थ केवल दूसरे से है। और यही इंसानों के बारे में सच है। जब मर्द की विद्या औरत के रूपान्तरण से मिल जाती है तभी महान जादुई मिलन की रचना होती है, और उसे ही ‘ज्ञान’ कहते हैं। ज्ञान का अर्थ है जानना, और बदल जाना।’

ब्रीडा ने देखा कि हवा की ताकत और रफ़्तार बढ़ते जा रहे थे और विका की आवाज़ उसे फिर से एक ट्रांस में ले जा रही थी। यूँ था कि जैसे जंगल की शक्तियाँ जीवित थीं और इसी स्थल पर ध्यान दे रही थीं।

'लेट जाओ,' विका ने कहा।

ब्रीडा लेट गई और अपनी टांगें फैला लीं। ऐन ऊपर गहरा, नीला, बिना बादलों का आकाश प्रकाशमान था।

'अपनी देन की खोज में जाओ। मैं आज तुम्हारे साथ नहीं आ सकती, लेकिन डरो मत। तुम ख़ुद को जितनाज़्यादा समझोगी, इस दुनिया को भी उतना ही ज़्यादा समझ पाओगी। और उतनी ही नजदीक पहुँचती जाओगी उसके, जो है तुम्हारा सोलमेट, तुम्हारा पूरक अंश।'

विका ने नीचे झुक कर लड़की को देखा। 'बिल्कुल वैसी है जैसी मैं कभी हुआ करती थी,' उसने लाड से सोचा। 'हर चीज़ के मायनों की तलाश में और दुनिया को देखने में उतनी ही सक्षम ज्यों प्राचीन व़क्तों की पुरज़ोर आत्मविश्वासी औरतें, जो अपने कुटुम्ब कबीलों पर ख़ुशी से राज करती थीं।'

लेकिन उन व़क्तों में ईश्वर ख़ुद एक औरत था। विका ब्रीडा पर झुकी और उसकी जीन्स की बैल्ट खोल उसकी ज़िप आधी सरका दी। ब्रीडा की सभी मांसपेशियाँ तनाव से जड़ हो गईं।

'फ़िक्र न करो,' विका ने लाड से कहा।

उसने ब्रीडा की टी-शर्ट उठा नाभि से ऊपर सरका दी। फिर उसने अपने लबादे की जेब से एक स्फटिक का चमकता टुकड़ा लिया और ब्रीडा की नाभि पर रख दिया।

'अब मैं चाहती हूँ कि तुम अपनी आँखें बन्द कर लो,' उसने धीमी आवाज़ में कहा। आसमान के रंग की कल्पना करो, लेकिन अपनी आँखें बन्द रखो।

अब उसने लबादे में से छोटा-सा बैंगनी एमिथिस्ट निकाला और उसे ब्रीडा की आँखों के बीचों-बीच रख दिया।

'अब जैसे-जैसे मैं कहती जाऊँ ठीक वैसे ही करती जाओ, और किसी चीज़ की फ़िक्र न करो। तुम सृष्टि के केन्द्र पर हो। तुम्हें अपने चारों ओर सितारे दिखाई दे रहे हैं और कुछ प्रकाशमान ग्रह भी। इस पूरे दृश्य को यूँ अनुभव करो जैसे यह तुम्हारे चारों ओर लिपटा है, न कि कोई तस्वीर या फ़िल्म। इस सृष्टि को ध्यान में बसा लो और इसका गहरा आनन्द लो, और किसी बारे में फ़िक्र करने की जरूरत नहीं। सिर्फ़ अपने गहरे आनन्द पर एकाग्र रहो।

अपराध-भाव लेष-मात्र भी न हो।'

ब्रीडा ने सितारों की सृष्टि को देखा और जान गई कि वह विका की आवाज़ को सुनते हुए भी इस सृष्टि में प्रवेश कर सकती थी। आवाज़ ने उसे सृष्टि के बीचों-बीच एक विशाल फैले गिरजाघर की कल्पना करने को कहा। ठीक वैसा ही करते हुए ब्रीडा ने गहरे पत्थरों का बना मध्ययुगीन गिरजाघर देखा और जो चाहे बेहद बेतुका लगे, लेकिन चारों ओर फैली सृष्टि का ही हिस्सा लग रहा था।

'गिरजे की ओर जाओ और सीढ़ियाँ चढ़ो। अन्दर चली जाओ।'

ब्रीडा ने विका के आदेश के अनुसार किया। वह गिरजे की सीढ़ियाँ चढ़ी, और वह पत्थर के ठण्डे फर्श को अपने नंगे पैरों तले महसूस कर सकती थी।

एक पल को यूँ लगा जैसे कोई और भी था वहाँ, उसके साथ, और विका की आवाज़ उसके पीछे चलने वाले से आती लगी। 'यह मेरी ही कल्पना होगी,' ब्रीडा ने सोचा, और अचानक उसी व़क्त उसे दृश्य अदृश्य दुनियाओं के बीच के पुल के बारे में याद आ गया। उसे निराशा या नाकामी से डरना नहीं था।

अब ब्रीडा गिरजाघर के द्वार पर खड़ी थी। वह विशाल था, ढले लोहे का बना, उस पर सन्त महात्माओं के जीवन के दृश्य ढले थे और वह टैरो के साथ की यात्रा में दिखे दरवाज़े से एकदम अलग था।

' दरवाज़ा खोलो और अन्दर चली जाओ।' ब्रीडा को अपने हाथों के नीचे दरवाज़े की सांकल की ठण्डी धातु महसूस हुई। इतना भारी और विशाल होने के बावजूद द्वार आसानी से खुल गया। वह अन्दर गई और ख़ुद को एक विशाल गिरजे में पाया।

'अपने चारों ओर की हर चीज़ को गौर से देखो।' विका बोली। चाहे बाहर अँधेरा था, फिर भी विशाल रंगे काँच की खिड़कियों से गिरजे में रोशनी बह कर आ रही थी। उसे गिरजे में लकड़ी के बैंच, वेदी, सजावटी स्तम्भ और कुछ रोशन मोमबत्तियाँ दिखाई दे रही थीं। फिर भी सब जैसे खाली और भुला दिया गया लग रहा था। लकड़ी के बैंचों पर धूल जमी थी।

'अपने बाईं ओर चलो। कहीं-न-कहीं तुम्हें एक और दरवाज़ा मिलेगा, लेकिन इस बार वह बहुत छोटा होगा।'

ब्रीडा गिरजे में हर ओर गई। उसे अपने नंगे पैरों तले धूल पड़े फ़र्श का मैलापन महसूस हो रहा था। कहीं से उसे एक दोस्ताना आवाज़ रास्ता बता रही थी। वह जानती थी कि यह विका की आवाज़ थी, लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसका अपनी कल्पना पर अब कोई वश न था। वह पूरे होश में थी लेकिन फिर भी जो उसे कहा जा रहा था, उसे न

मानना उसके वश में न था।

उसे दरवाज़ा मिल गया।

‘अन्दर जाओ। घुमावदार सीढ़ियाँ तुम्हें नीचे ले जायेंगी।’

दरवाज़े में घुसने के लिये ब्रीडा को झुकना पड़ा। सीढ़ियों को रोशन करने के लिये दीवारों पर मशालें जल रही थीं। सीढ़ियाँ बेहद साफ़ थीं। मशालों को जलाने के लिये कोई वहाँ पहले से आया था।

‘तुम अपने पिछले जन्मों को ढूँढने निकल रही हो। इस गिरजाघर के तहख़ाने में एक लाइब्रेरी है। अब हम वहाँ जा रहे हैं। मैं सीढ़ियों के नीचे तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी।’

ब्रीडा नीचे उतरती गई, न जाने कितनी देर। उसे चक्कर भी आने लगे। जब आखिरकार वह नीचे पहुँची तो वहाँ विका अपने लबादे में उसका इन्तज़ार कर रही थी। ‘अब आसान हो जायेगा,’ वह अब ज़्यादा सुरक्षित महसूस कर रही थी। और अब भी वह बेहद गहरे ट्रांस में थी।

विका ने सीढ़ियों के सामने एक और दरवाज़ा खोला।

‘मैं तुम्हें यहाँ अकेला छोड़ने जा रही हूँ। मैं बाहर हूँ, तुम्हारा इन्तज़ार करते हुए। कोई किताब चुनो और वह तुम्हें वो बता देगी जो तुम्हें जानने की ज़रूरत है।’

ब्रीडा का इस ओर ध्यान भी न गया कि विका अब वहाँ नहीं थी। वह धूल में लिपटे ग्रंथ देख रही थी। ‘मुझे यहाँ और अक्सर आना चाहिए और हर चीज़ की अच्छे से सफ़ाई करनी चाहिए।’ उसका अतीत मैला और बेध्यान पड़ा था, और ब्रीडा को सोच कर दुख हुआ कि उसने इन सभी किताबों को पहले कभी न पढ़ा था। शायद उनमें वे ख़ास और पहले से भुला दिये गये सबक थे जिन्हें वह अपनी ज़िन्दगी में उतार सकती थी।

उसने अल्मारी में रखी किताबें देखी। ‘इतने सारे जन्म-जीवन!’ यदि वह इतनी प्राचीन थी, तो उसे कहीं ज़्यादा ज्ञान होना चाहिए था। काश वह इन सभी को पढ़ सकती लेकिन उसके पास ज़्यादा व़क्त नहीं था, और उसे अपने सहज अन्तर्ज्ञान पर भरोसा रखना होगा। अब, जबकि उसे रास्ता मालूम था, वह कभी भी वापिस आ सकती थी।

वह कुछ देर असमंजस में खड़ी रही, कि क्या चुने। फिर उसने बिना सोचे, एक किताब उठा ली। वह एक पतली-सी किताब थी और ब्रीडा उसे ले फ़र्श पर बैठ गई। उसने किताब को अपनी गोद में रख लिया, लेकिन डर रही थी, कि यदि उसे खोला और कुछ न हुआ, या कि उसमें लिखा वह पढ़ न पाई, तो?

‘मुझे जोखिम तो उठाने होंगे। मुझे नाकामी का डर महसूस करने की ज़रूरत है,’ किताब खोलते हुए उसने सोचा। जैसे ही उसने पृष्ठों को देखा, उसकी तबीयत ख़राब होने लगी, और फिर से चक्कर आने लगे।

‘मैं बेहोश होने वाली हूँ।’ सोचते ही चारों ओर अँधेरा छा गया।

वह जगी तो पाया कि उसके चेहरे पर पानी टपक रहा था। उसे हवा में तैरते विशाल गिरजाघर के बारे में अजीब और अबूझ स्वप्न आकर जा चुका था। स्वप्न में वह किताबों से भरी लाइब्रेरियों में घूम रही थी जबकि वह कभी किसी लाइब्रेरी में नहीं गई थी।

‘लोनी, ठीक तो हो?’

नहीं, वह ठीक नहीं थी। वह अपना दायाँ पैर महसूस नहीं कर पा रही थी, और जानती थी कि यह अच्छी बात नहीं थी। न ही वह बात करना चाहती थी क्योंकि वह स्वप्न को भूलना नहीं चाहती थी।

‘लोनी, आँखें खोलो।’

ज़रूर ही उसे बुखार था, और सरसाम भी, और लेकिन जो उसने अपने बहके सरसाम में देखा था वह इतना जीवन्त, इतना सच था। वह चाहती थी कि उसे जगाने वाला चुप हो जाये, क्योंकि अब स्वप्न तेजी से धुँधला पड़ रहा था, इससे पहले कि वह उसके मायने समझ पाती।

आसमान में बादल थे, और वे इतना नीचे आ गये थे कि वे महल की सबसे ऊँची मीनार को छूने लगे थे। वह लेटी बादलों को देखती रही। ठीक ही था कि वह सितारों को न देख सकती थी। पुजारियों के मुताबिक, सितारे तक, पूरी तरह भले न थे।

उसके आँखें खोलने से कुछ पल पहले ही बारिश रुक गई थी। लोनी ख़ुश थी कि पानी बरसा था, क्योंकि इसका अर्थ था कि महल की पानी की हौदियाँ भर गई होगी। धीरे-धीरे उसने बादलों से नज़रें हटा मीनार, फिर विशाल आँगन में जल रहे अलाव और फिर घबराई हुई भीड़ को देखा।

‘टैल्बो,’ उसने धीरे से कहा।

टैल्बो ने उसे बाँहों में ले लिया। वह उसके कवच की ठण्डक और उसके बालों में बसे धुएँ की कालिख को महसूस कर रही थी।

‘कितना समय गुज़रा होगा? कौन-सा दिन है आज?’

‘तुम तीन दिन से सो रही हो,’ टैल्बो ने कहा। लोनी ने टैल्बो को देखा और उसे तरस आने लगा। वह पहले से पतला हो गया था, चेहरे पर गर्द की परत, रंगत फीकी। न कि उससे कोई फ़र्क पड़ता था — वह उससे प्रेम करती थी।

‘प्यास लगी है टैल्बो।’

‘पानी नहीं है। फ्रांसीसी सेना ने गुप्त रास्ता ढूँढ निकाला।’

लोनी को फिर से सिर में आवाज़ें सुनाई दे रही थी। लम्बे समय तक वह इन आवाज़ों से नफ़रत करती रही थी। उसका पति एक योद्धा था, पेशेवर योद्धा, जो बरस के ज़्यादातर दिन लाम पर बिताता था, और उसे हमेशा ही डर रहता था कि ये आवाज़ें उसे एक दिन उसके पति की युद्ध में मौत का सन्देश सुनायेंगी। उसने इन आवाज़ों को चुप रखने का तरीका खोज निकाला था। उसे बस अपना ध्यान गाँव के पास वाले प्राचीन वृक्ष पर लगाये रखना होता था। जब वह ऐसा करती तो आवाज़ें चुप हो जाती। लेकिन अब, वह बहुत कमज़ोर थी और आवाज़ें लौट आयी थीं।

‘तुम मरने वाली हो,’ आवाज़ों ने कहा। ‘लेकिन वह बचा लिया जायेगा।’

‘लेकिन बारिश तो हुई थी टैल्बो। मुझे पानी चाहिए।’

‘कुछ ही बूँदें पड़ी। न के बराबर।’

लोनी ने फिर से बादलों की ओर देखा। वे पूरे सप्ताह छाये रहे थे और सूरज की रोशनी रोकने के सिवा और कुछ न किया था। सर्दी को और गहरा और मवेशियों को और हताश कर रहे थे ये बादल। शायद फ्रांसीसी कैथलिक सही थे। शायद ईश्वर उन्हीं की ओर था।

कुछ और योद्धा उनकी ओर आये। हर ओर आग लगी थी और लोनी को अचानक लगा कि वह शायद नर्क की लपटों के बीच थी।

‘जनाब, पुजारी सब को इकट्ठा कर रहे हैं।’ उनमें से एक ने टैल्बो से कहा। ‘हमें जंग के लिये लाया गया था, मरने के लिये नहीं,’ एक और ने कहा।

‘फ्रांसीसियों ने हमारे समर्पण के लिये शर्तें रखीं हैं,’ टैल्बो ने कहा। ‘वे कह रहे हैं कि जो वापिस कैथलिक मत में लौट जायेंगे उन्हें बिना नुकसान पहुँचाये जाने दिया जायेगा।’

‘श्रेष्ठतमों को यह मंज़ूर न होगा,’ आवाज़ें लोनी के लिये फुसफुसाईं। वह श्रेष्ठतम योद्धाओं को जानती थी। वह उन्हीं के कारण यहाँ थी, न कि अपने घर, जहाँ वह हमेशा टैल्बो के युद्ध

से लौटने की प्रतीक्षा किया करती थी।

श्रेष्ठतम योद्धा चार महीने से उस महल में घेराबन्द थे, और उस दौरान गाँव की औरतें गुप्त रास्ते से रसद, कपड़ा और बारूद महल में पहुँचाती रही थीं। उस दौरान वे अपने पतियों से मिल सकीं, और उन्हीं के कारण युद्ध जारी रह सका। लेकिन अब गुप्त रास्ता ढूँढ निकाला गया था, और वह गाँव वापिस न जा सकती थी, न ही बाकी औरतें।

उसने उठकर बैठने की कोशिश की। अब उसका पैर दु:ख न रहा था। आवाज़ें बता रही थी कि यह बुरा लक्षण था।

'हमें उनके ईश्वर से क्या लेना। हम इस मुद्दे पर जान नहीं दे सकते, जनाब,' एक और सैनिक ने कहा।

महल के अन्दर से घड़ियाल बजने लगा। टैल्बो उठ खड़ा हुआ।

'प्लीज़, मुझे अपने साथ ले जाओ,' वह गिड़गिड़ा रही थी। टैल्बो ने अपने साथियों को देखा और फिर उस औरत को जो काँपती हुई उसके सामने पड़ी थी। एक क्षण को उसे पता नहीं था वो क्या करे। उसके साथियों को युद्ध की आदत थी लेकिन वे जानते थे कि प्रेम में पड़े योद्धा युद्ध के दौरान छिप जाते हैं।

'मैं मरने वाली हूँ टैल्बो, प्लीज़ मुझे अपने साथ ले चलो।' एक योद्धा ने टैल्बो को नज़र भर देखा। 'इसे यहाँ अकेला नहीं छोड़ना चाहिए,' उसने कहा। फ्रांसीसी शायद फिर से गोली चलायेंगे।'

टैल्बो ने सहमत होने का दिखावा किया। उसे मालूम था कि फ्रांसीसी ऐसा कुछ नहीं करेंगे। मॉन्सेग्युर किले के समर्पण की शर्तों पर बात करने के लिये गोलाबारी रोक दी गई थी। लेकिन यह योद्धा जानता था कि टैल्बो के मन में क्या चल रहा था। वह भी शायद किसी का प्रेमी था।

'वह जानता है कि तुम मरने वाली हो,' आवाज़ों ने लोनी से कहा जब टैल्बो उसे नरमाई से बाँहों में उठा रहा था। लोनी सुनना नहीं चाहती थी, वह याद कर रही थी। एक ग्रीष्म की दोपहर, जब वे दोनों यूँ ही गेहूँ के खेतों से होकर जा रहे थे। उसे तब भी प्यास लगी थी और पहाड़ से निकलते झरने से उन्होंने पानी पिया था।

मर्द, सैनिकों, औरतों और बच्चों की भीड़ उस विशाल चट्टान के गिर्द जमा थी जो मॉसिग्युर के किले की पश्चिमी दीवार का हिस्सा थी। हवा दमघोट चुप्पी से बोझिल थी और लोनी जानती थी कि ऐसा पुजारियों के प्रति आदर से नहीं बल्कि डर की वजह से था।

पुजारी आन पहुँचे। वे संख्या में काफ़ी अधिक थे, सभी काले लबादों में लिपटे, जिन पर विशाल पीले सलीब का निशान काढ़ा हुआ था। वे मीनार से लगी सीढ़ियों पर जा बैठे जो चट्टान काट कर बनाई गई थीं। वहाँ पहुँचने वाले आखिरी पुजारी के सफ़ेद बाल थे और वह दीवार के सबसे ऊँचे हिस्से पर चढ़ गया। वह हर जगह जल रही आग की लपटों से रोशन था, और उसका काला लबादा हवा में फड़फड़ा रहा था।

वहाँ मौजूद लगभग सभी नीचे झुक गये और आगे झुक, हाथ प्रार्थना में बाँधे तीन बार सिर ज़मीन पर पटक दिया। टैल्बो और उसके पेशेवर योद्धा बिना झुके खड़े रहे। उन्हें केवल युद्ध करने के लिये भाड़े पर बुलाया गया था।

'हमें समर्पण की इजाज़त मिल गई है,' पुजारी ने कहा। 'तुम सब जाने के लिये आज़ाद हो।'

भीड़ से शुक्र की लम्बी साँस आयी।

'दूसरे ईश्वर की शरण में पहुँची आत्माएँ इस दुनिया के साम्राज्य में रहेंगी। सच्चे ईश्वर से जुड़ी आत्माएँ उसकी असीमित अपार दया की शरण में जायेंगी। युद्ध रुकेगा नहीं, क्योंकि दूसरा ईश्वर अन्त में पराजित होगा, चाहे कि पहले ही कुछ फ़रिश्ते उसने भ्रष्ट कर लिये हैं। यह दूसरा ईश्वर पराजित होगा लेकिन नष्ट न होगा, वह सदा-सदा के लिये नर्क में रहेगा, उन सभी आत्माओं के साथ जिन्हें वह अपने मोह में फुसला सका।'

भीड़ के लोग दीवार पर खड़े उस शख्स को एक टक देख रहे थे। अब उन्हें यकीन न था कि वे वहाँ से छूट सदा-सदा के लिये नर्क में तड़पना चाहते थे।

'कैथर चर्च ही सच्ची चर्च है,' पुजारी आगे बोलता गया। 'शुक्र है जीसस क्राइस्ट और पवित्र आत्मा का, कि हम ईश्वर के साथ सम्पर्क में आ सके। हमें पुनर्जन्म की ज़रूरत नहीं। हमें दूसरे ईश्वर के साम्राज्य में लौटने की ज़रूरत नहीं।'

लोनी ने देखा कि तीन पुजारी हाथ में बाइबल लिये आगे बढ़े।

'अब अन्तिम सान्त्वना 'कोन्सोलॅमँटम' उन्हें बाँटी जायेगी जो हमारे साथ जान देना चाहते हैं। लेकिन गहरे नीचे, आग की लपटें इन्तज़ार में हैं। मौत तड़पा-तड़पा कर आयेगी, और लपटों से जलती चमड़ी का दर्द पहले सहे किसी भी दर्द-सा न होगा। लेकिन यह सम्मान तुम सभी की किस्मत में नहीं, केवल जो सच्चे कैथर हैं। बाकियों को ज़िन्दा रहने की सज़ा

मिलेगी।'

दो औरतें शर्माती हुई हाथों में बाइबल पकड़े पुजारियों के पास गई। एक लड़के ने अपनी माँ की बाहें छुड़ाईं और उनके साथ हो लिया।

चार पेशेवर योद्धा टैल्बो के पास गये।

'जनाब, हम भी पवित्र शब्द अपनायेंगे। हम बपतिस्मा चाहते हैं।'

'इसी तरह परम्परा कायम रहती है,' आवाज़ों ने कहा। 'क्योंकि लोग एक विचार की खातिर जान देने को तैयार होते हैं।'

लोनी टैल्बो के फैसला सुनाने का इन्तज़ार कर रही थी। पेशेवर योद्धा पूरी ज़िन्दगी केवल पैसे के लिये युद्ध करते आये थे। लेकिन इन लोगों से मिलने के बाद अब वे बदलने को तैयार थे। टैल्बो ने आखिरकार हामी भर दी, चाहे इसका अर्थ अपने कुछ बेहतरीन योद्धा खोना था।

'चलो चलें,' लोनी ने कहा। 'दीवारों की ओर चलते हैं। उन्होंने कहा था कि जो जाना चाहे जा सकता है।'

'आराम करना बेहतर रहेगा लोनी।'

'तुम तो मरने वाली हो,' आवाज़ें फिर से फुसफुसाईं।

'मैं पायर्नीज़ देखना चाहती हूँ। मैं उस घाटी को सिर्फ़ एक बार और देखना चाहती हूँ टैल्बो। तुम जानते हो कि मैं मरने वाली हूँ।'

हाँ, वह जानता था। उसे युद्ध के मैदान की आदत थी और वह जानता था कि कब कौन-सा जख्म उसके सैनिक के लिये जानलेवा होगा। लोनी का जख्म पिछले तीन दिन से खुला था, उसके ख़ून में जहर फैलाता हुआ। और लोनी मौत के नज़दीक थी। उसका बुखार उतर चुका था। टैल्बो जानता था कि यह भी एक बुरा लक्षण था। जब तक पैर में दर्द हो रहा हो और बुखार चढ़ा रहे, शरीर मौत से संघर्ष कर रहा था। अब संघर्ष ख़त्म हो चुका था और सिर्फ़ थोड़े व़क्त की बात थी।

'तुम्हें डर नहीं?,' आवाज़ें बोली। नहीं, लोनी को डर न था। बचपन में भी वह जानती थी कि मृत्यु केवल एक नई शुरुआत होती है। उस व़क्त यही आवाज़ें उसकी सबसे बड़ी साथी थीं। उनके चेहरे, शरीर और हावभाव थे, जो सिर्फ़ उसे दिखाई देते थे। ये वे जन थीं जो दूसरी दुनियाओं से आती थीं। वे उससे बातें करतीं, और उसे कभी अकेला न महसूस होने देतीं। इन्हीं की मदद से वह खेल-खेल में दूसरे बच्चों को चौंका देती। उसकी माँख़ुश थी कि वे

कैथर देश में रहते थे — 'यदि कैथलिक लोग यहाँ होते, तो तुम्हें ज़िन्दा जला दिया जाता,' वे कहा करती थीं। कैथर ऐसी चीज़ों को कोई महत्व नहीं देते थे। उनका मानना था कि अच्छा-अच्छा होता है, और बुराबुरा, और सृष्टि की कोई ताकत इसे बदल नहीं सकती।

फिर फ्रांसीसी आन पहुँचे, इस दावे के साथ, कि कैथर नाम का कोई देश नहीं, और आठ बरस की उम्र से वह युद्ध के बीच जी रही थी।

युद्ध से उसे एक बेहद अच्छी सौगात मिली थी — उसका पति, जिसे कैथर पुजारियों ने किसी सुदूर देश में किराये पर लिया था। वे ख़ुद कभी हथियार न उठाते थे। लेकिन युद्ध अपने साथ कुछ बुरा भी लाया था : ज़िन्दा जला दिये जाने का खौफ़, क्योंकि कैथलिक लगातार उसके गाँव के नज़दीक आते जा रहे थे। लेकिन आवाज़ें उसे बताती रहीं कि क्या होने वाला था, और उसे क्या करना होता था, लेकिन वह उनकी दोस्ती नहीं चाहती थी क्योंकि उन्हें हमेशा ही ज़रूरत सेज़्यादा मालूम होता था। फिर एक आवाज़ ने उसे प्राचीन वृक्ष पर ध्यान लगाने वाली तरकीब सिखाई, और उसने उन आवाज़ों को तब से न सुना था जब से कैथर लोगों के ख़िलाफ़ आखिरी धार्मिक युद्ध छेड़ा गया। और फ्रांसीसी कैथलिक युद्ध पर युद्ध जीतने लगे।

लेकिन आज उसमें उस पेड़ के बारे में सोचने की ताकत न थी। आवाज़ें वापस लौट आई थीं और अब उसे बुरा भी न लग रहा था। बल्कि इसके विपरीत, उसे उनकी ज़रूरत थी। वही तो राह दिखायेंगी जब वह मर जाएगी।

'मेरे बारे में फ़िक्र न करो टैल्बो। मुझे मरने से डर नहीं लगता।' वह बोली।

वे दीवार के ऊपर पहुँच गये। लगातार ठिठुरा देने वाली हवा चल रही थी, और टैल्बो ने अपना लबादा और कस कर लपेट लिया। लोनी को अब ठण्ड नहीं लग रही थी। उसे दूर क्षितिज पर एक कस्बे की रोशनियाँ दिखाई दे रही थीं और पहाड़ की तलहटी में सेनाओं के पड़ाव की रोशनी भी। घाटी की तलहटी में चारों ओर आग के अलाव जल रहे थे। फ्रांसीसी सैनिक आखिरी हुक्म का इन्तज़ार कर रहे थे। नीचे से बाँसुरी की धुन और गाने की आवाज़ें हवा पर तैरती आ रही थीं।

'सैनिक हैं,' टैल्बो ने कहा। 'वे जानते हैं कि वे किसी भी पल मर सकते हैं, और इसलिये, ज़िन्दगी उनके लिये एक लम्बा उत्सव है।'

लोनी को अचानक ज़िन्दगी पर बेहद क्रोध आने लगा। आवाज़ें उसे बता रही थीं कि टैल्बो और औरतों से मिलेगा, उसके बच्चे होंगे और वह शहरों से लूटे गये खज़ानों से अमीर होगा। 'लेकिन वह और किसी से ऐसा प्रेम न करेगा जैसा तुम से, क्योंकि तुम सदा-सदा के लिये उसी में बसी हो,' आवाज़ों ने कहा।

लोनी और टैल्बो एक-दूसरे के गिर्द बाहें डाले बहुत समय तक नीचे के दृश्य को देखते, सैनिकों के गीत सुनते रहे। लोनी को अहसास था कि इसी पहाड़ पर अतीत में भी कई युद्ध हुए थे, इतने गहरे अतीत में कि आवाज़ें तक उसे याद न कर सकती थीं।

'हम शाश्वत हैं, टैल्बो। पुराने व़क्त में, जब मैं आवाज़ों के चेहरे और शरीर देख सकती थी, वे मुझे यही बताया करती थीं।'

टैल्बो अपनी पत्नी की ईश्वरीय देन के बारे में जानता था, लेकिन बहुत अर्से से उसने उसका जिक्र नहीं किया था। शायद यह बुखार का असर था।

'और फिर भी, कोई भी जन्म दूसरे जैसा नहीं। हो सकता है कि हम कभी न मिलें, और मैं चाहती हूँ कि तुम यह जान लो, कि मैंने पूरी ज़िन्दगी तुम से प्रेम किया है। मैं तुम्हें मिलने से पहले भी तुमसे ही प्रेम करती थी। तुम मेरा ही हिस्सा हो।

'मैं मरने वाली हूँ, और क्योंकि कल का दिन किसी भी और दिन जैसा ही होगा, मैं पुजारियों के साथ मरना चाहूँगी। उनकी मान्यताएँ मैं कभी समझ न पायी, लेकिन वे सदा ही से मुझे समझते हैं। मैं उनके साथ अगले जीवन में जाना चाहती हूँ। शायद मैं अच्छी रहनुमा बन सकूँ, क्योंकि मैं उन दुनियाओं में पहले भी गई हूँ।'

लोनी किस्मत की विडम्बना के बारे में सोच रही थी। वह आवाज़ों से डरती आयी थी कि कहीं वे उसे नर्क की आग की राह न डाल दें, और फिर भी, आग ही तो थी, उसका इन्तज़ार करती।

टैल्बो ने अपनी पत्नी को देखा। उसकी आँखें धुँधली पड़ रही थीं, और फिर भी उसमें वही अजीब कशिश थी जिससे वह पहली बार उसकी ओर आकर्षित हुआ था। उसने लोनी को कुछ बातें कतई नहीं बताई थीं, जैसे कि वे औरतें जो उसे युद्ध में लूटे खज़ाने के साथ दुनिया की यात्राओं के दौरान मिलती थीं, जो उसके लौटने के इन्तज़ार में दिन बिता रही थीं। उसने लोनी को यह सब इसलिये भी नहीं बताया था क्योंकि उसे विश्वास था कि वह सब कुछ वैसे भी जानती ही थी, और उसे माफ़ किये हुए थी, क्योंकि वह उसका सबसे अहम और एक ही प्रेम था, और ऐसा प्रेम इस दुनिया के मसलों से कहीं ऊपर होता है।

लेकिन कुछ और भी था जो उसने लोनी को नहीं बताया था और जो मुमकिन है कि वह कभी न जानेगी : लोनी का प्यार ही उसके जीने की वजह थी; कि उसी के प्रेम के कारण वह दुनिया के दूरदराज़ कोनों तक में गया था, कि वह इतना अमीर हो जाये कि कुछ ज़मीन खरीद ले और फिर ज़िन्दगी के आखिरी दिनों तक उस के साथ चैन से रह सके।

यह उसका इस छुइमुई-सी नाज़ुक लड़की में विश्वास था — और अब जिसकी लौ तेज़ी से मद्धम हो रही थी — जिसकी वजह से वह हमेशा ही गौरव की खातिर जूझा था, क्योंकि

वह जानता था कि युद्ध के बाद वह सारी विभीषिका उसकी बाहों में भूल जायेगा। कि चाहे वह कितनी ही औरतों को जानता था, सिर्फ़ उसकी बाहों में ही वह आँखें बन्द कर बच्चे की तरह सुकून में सो सकता था।

'जा कर पुजारी को बुला लाओ, टैल्बो,' वह बोली। 'मुझे बप्तिस्मा चाहिए।'

टैल्बो एक पल को हिचकिचाया। केवल योद्धा ही अपनी मौत चुन सकते हैं, लेकिन इस औरत ने प्रेम के प्रति अपना जीवन दिया था और शायद, उसके लिये, प्रेम एक तरह का युद्ध ही था।

वह उठा और दीवार में बनी सीढ़ियाँ उतर गया। लोनी ने नीचे से आते संगीत पर ध्यान लगाने की कोशिश की, जोकि मौत की ओर उसके बहाव को आसान बना रहा था। इस दौरान आवाज़ों ने बोलना जारी रखा।

'अपने जीवन में, हर औरत दैवी ज्ञान की चार अँगूठियों का इस्तेमाल कर सकती है। तुमने सिर्फ़ एक का इस्तेमाल किया, और वह भी ग़लत अँगूठी का।'

लोनी ने अपनी अँगुलियों को देखा। उनमें कटाव और दरारें पड़ गई थीं और नाख़ूनों में गर्द जम गई थी।

लेकिन कोई अँगूठी न थी। आवाज़ें हँस पड़ीं।

तुम जानती हो कि हम किन अँगूठियों की बात कर रहे हैं। वे चार रूप जो दैवी ज्ञान और इस जीवन के उद्देश्य को जोड़ते हैं : कुँवारी, सन्त, शहीद और जादूगरनी।

लोनी दिल में जानती थी कि आवाज़ें क्या कह रही थीं, लेकिन उसे इन बातों के मायने याद नहीं आ रहे थे। उसने यह सब बहुत पहले सुना था, ऐसे युग में जब लोग अलग तरह के कपड़े पहनते थे और दुनिया को देखने का उनका नज़रिया भी अलग था। तब उसका भी अलग कोई और नाम था और वह कोई दूसरी ही भाषा बोलती थी।

'ये वो चार तरीके हैं जिनसे औरत सृष्टि के साथ सम्पर्क में आ हम-एक हो सकती है,' आवाज़ों ने कहा — 'जैसे कि उसके लिये इन प्राचीन बातों को फिर से याद करना ज़रूरी था। 'कुँवारी' के पास मर्द और औरत दोनों की शक्तियाँ होती हैं। उसे सदा ही एकाकीपन की नियति मिली है लेकिन एकाकीपन अपने भेद खोल देता है। कुँवारी को यह कीमत चुकानी पड़ती है — किसी की ज़रूरत न पालना, दूसरों के प्रति अपने प्रेम में थकते जाना, और एकाकीपन की राह से विश्व का ज्ञान ढूँढ निकालना।'

लोनी अब भी नीचे फैली छावनी को देख रही थी। हाँ, वह ये बातें जानती थी।

‘और शहीद,’ आवाज़ें बोलती जा रही थीं, ‘शहीद में उन सभी की शक्ति बसी है जिन्हें दु:ख और पीड़ा से झुकाया नहीं जा सकता। वह ख़ुद को समर्पित कर देती है, दु:ख उठाती है, और त्याग की राह चल विश्व ज्ञान प्राप्त करती है।’

लोनी ने फिर से अपने हाथों को देखा। और वहाँ, अदृश्य लेकिन जगमगाती हुई, ‘शहीद’ की अँगूठी उसकी एक उँगली में डली हुई थी।

‘तुम औरत के सन्त रूप को चुन सकती थीं, चाहे कि वह तुम्हारे लिये सही अँगूठी न होती,’ आवाज़ों ने कहा। ‘ ‘‘सन्त’’ रूप में उन लोगों का साहस होता है जिनके लिये देने में ही सच्ची प्राप्ति का सुख है। वे अन्तहीन गहराइयों वाला कुआँ होते हैं जिसमें से लोग लगातार पानी निकाल सकते हैं, अपनी प्यास बुझाने के लिये। और यदि कुआँ खाली हो जाये तो सन्त अपना रक्त आगे बढ़ा देती है ताकि कोई भी प्यासा न जाये। आत्मसमर्पण द्वारा सन्त विश्व ज्ञान हासिल करती है।’

आवाज़ें चुप हो गईं। लोनी ने टैल्बो के पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आने की आहट सुनी। वह जान गई थी कि उस जन्म में उसे कौन-सी अँगूठी लेनी चाहिए थी, क्योंकि उसने वही अँगूठी हर जन्म में पहनी थी, जब वह दूसरे नामों से जानी जाती थी और दूसरी ज़ुबानों में बात करती थी। उसे विश्व का ज्ञान आनन्द की राह चल कर हासिल होता था, लेकिन अब वह उस बारे में सोचना नहीं चाहती थी। ‘शहीद’ की अँगूठी उसकी उँगली पर चमक रही थी, अदृश्य।

टैल्बो और नज़दीक आ गया। और अचानक जब वह उसे अपने ऊपर झुके देख रही थी तो लोनी ने देखा कि रात में एक अलग, अपूर्व-सी रोशनी थी, जैसे कि धूप से चमकता दिन हो।

‘जागो,’ आवाज़ों ने कहा। लेकिन ये कोई और आवाजें थीं, जो उसने पहले कभी नहीं सुनी थीं। कोई उसकी बाईं कलाई मल रहा था।

‘चलो ब्रीडा, उठो।’

उसने अपनी आँखें खोलीं और फिर बन्द कर लीं, क्योंकि आकाश की रोशनी बेहद गहरी और चमकदार थी। मौत भी क्या अजीब चीज़ होती है।

‘आँखें खोलो,’ विका ने कहा।

लेकिन उसे वापिस महल जाना था। एक मर्द, जिससे वह प्रेम करती थी, एक पुजारी की तलाश में गया था। वह यूँ भाग नहीं सकती थी। वह अकेला था, और उसे लोनी की ज़रूरत

थी।

‘बताओ कि तुम्हारी ईश्वर की देन क्या है।’

विका ने उसे सोचने का व़क्त न दिया। वह जानती थी कि ब्रीडा किसी बेहद असाधारण अनुभव से होकर गुज़री थी, टैरो के कार्ड वाले अनुभव से कहीं ज़्यादा पुरज़ोर। लेकिन फिर भी उसने ब्रीडा को सोचने का व़क्त न दिया। वह न तो उसकी भावनाएँ समझती भी, न ही उसे उनकी परवाह थी, वह सिर्फ़ उसके गिफ़्ट के बारे में जानना चाहती थी।

‘मुझसे अपने ‘गिफ़्ट’ के बारे में बात करो,’ विका बार-बार ज़िद कर रही थी।

ब्रीडा ने गहरी साँस ली, अपने क्रोध को वह मुश्किल ही काबू कर पा रही थी, लेकिन कोई छुटकारा न था।

यह औरत तब तक ज़िद पर अड़ी रहेगी जब तक उसे वह बता न देगी।

‘मैं एक औरत थी, जिसका प्रेमी...’

विका ने तुरन्त ही ब्रीडा का मुँह ढक दिया। फिर वह खड़ी हुई, हवा में अजीब रहस्यमयी संकेत बनाये और उसकी ओर मुड़ी।

‘ईश्वर का नाम लो। किसी भी परिस्थिति में, किसी भी पल में क्या बोल रही हो, इससे सावधान रहो।’

ब्रीडा समझ न पायी कि विका ऐसा बर्ताव क्यों कर रही थी।

‘ईश्वर स्वयं को हर चीज़ में प्रकट करता है, लेकिन शब्द तो उसका सबसे चहेता माध्यम है। विचार का वाइब्रेशन में ढला रूप ही शब्द है। तुम जो हवा में भेज रही हो वह पहले केवल ऊर्जा था, एनर्जी था। हर बोली हुई बात पर बहुत ध्यान दो,’ विका ने फिर कहा। ‘शब्द में बहुत से अनुष्ठानों से कहीं अधिक शक्ति है।’

ब्रीडा को अभी भी समझ नहीं आया। अपने अनुभव को बयान करने के लिये उसके पास शब्दों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

‘जब तुमने एक औरत की बात की,’ विका ने समझाया, ‘तुम वह औरत नहीं थी। तुम उसका अंश थीं। बाकी लोगों के पास भी यही याद हो सकती है।’

ब्रीडा को लगा जैसे उससे कुछ छीन लिया गया था। लोनी में बेहद कशिश थी और ब्रीडा उसे किसी के साथ बाँटना नहीं चाहती थी। और साथ में टैल्बो भी तो था।

‘मुझसे अपने गिफ़्ट के बारे में बात करो,’ विका ने फिर से कहा। वह लड़की को उस अनुभव से ज़्यादा चमत्कृत होने नहीं दे सकती थी। व़क्त में यात्रा करने के इस तरीके से पहले भी परेशानियाँ आयी थीं।

‘मेरे पास बताने को इतना कुछ है, और मुझे तुमसे बात करने की ज़रूरत है, क्योंकि और कोई मेरी बातों का विश्वास नहीं करेगा। प्लीज़,’ ब्रीडा गिड़गिड़ा रही थी।

वह उसे सब कुछ बयाँ करने लगी, उस पल से जब बारिश उसके चेहरे पर गिर रही थी। उसके पास एक ही मौका था और वह उसे व्यर्थ नहीं कर सकती थी, एक मौका किसी ऐसे के साथ, जो असाधारण में विश्वास रखता था। वह जानती थी कि कोई भी और, उसे उस तरह की इज्ज़त से नहीं सुनेगा, क्योंकि लोग यह जानने से डरते थे कि जीवन जादू से भरा था। उन्हें अपने घरों, नौकरियों, उम्मीदों की आदत थी और यदि कोई आकर यह कहता कि व़क्त में आगे या पीछे जाना सम्भव था, कि सृष्टि में तैरते महल देखना सम्भव था, कि टैरो के कार्ड कहानियाँ सुनाते थे, मर्द जो अँधेरी रात का सफ़र करते थे — तब लोग, जिन्हें ऐसे अनुभव न हुए थे, सोचते कि ज़िन्दगी ने उन्हें धोखा दिया था। ज़िन्दगी, उनकी सोच में, हर रोज़ एक-सी थी, हर रात, हर सप्ताह का अन्त, न बदलने वाली एक जैसी सच्चाई।

इसीलिये ब्रीडा को उस मौके को जीवन की डोर-सा पकड़ लेना था। यदि शब्द ईश्वर थे, तो हवा पर उसकी दास्तान सदा के लिये लिख दी जाये, कि उसने बीते व़क्त में यात्रा की थी और कि उसे हर बारीक व छोटी-से-छोटी बात याद थी, जैसे कि वह जंगल, जहाँ वे अब थे। और इसलिये, बाद में, जब कोई उसे यह सिद्ध कर दे कि ऐसा कुछ नहीं हुआ था, जब व़क्त और स्पेस उसे इस सब पर शक में डाल दें, जब वह ख़ुद विश्वास कर डाले कि यह सब एक भ्रम था। तब उस साँझ बोले गये ये शब्द, इस जंगल में, हवा में, स्पन्दन के रूप में मौजूद हों, और कम-से-कम एक इंसान, जिसके लिये जादू ज़िन्दगी का अभिन्न अंग था, जानती होगी कि यह सब वास्तव में हुआ था।

उसने महल के बारे में बताया, काले और पीले लबादों में लिपटे पुजारी, घाटी में जलते अलाव, उसके पति का कुछ भी सोचना और लोनी का उन्हें बिन कहे पढ़ पाना। विका आराम से बैठी सब सुनती रही, केवल जब मन में बोलती आवाज़ों का ज़िक्र आया, तब उसने टोका कि आवाज़ें मर्दों की थीं या औरतों की (वे दोनों की थीं), क्या उन्होंने कोई विशेष भावना जाहिर की, जैसे क्रोध या करुणा (नहीं, ऐसा कुछ न था), और क्या वह जब चाहे उन आवाज़ों को बुला सकती थी (उसे पता नहीं था, उसे इसके लिये कभी व़क्त न मिला।) ‘ठीक है, अब यहाँ से चलते हैं,’ विका ने कहा, और अपना लबादा उतार बैग में रख लिया। ब्रीडा कुछ निराश थी। उसने सोचा था कि शायद कुछ तारीफ़ मिलेगी या और कुछ नहीं तो इस सब का कुछ खुलासा ही होगा। लेकिन विका उन डॉक्टरों जैसी थी जो अपने मरीज़ को बहुत ठण्डे और निष्पक्ष भाव से देखते हैं और वे बीमारी के लक्षणों पर ज़्यादा ध्यान देते हैं न कि उस दर्द या पीड़ा की ओर, जो उन लक्षणों ने मरीज़ को दी थी।

वे लम्बी यात्रा कर वापिस पहुँचे। जब भी ब्रीडा ने उस मुद्दे को उठाने की कोशिश की, विका को अचानक बढ़ती कीमतों, भीड़ के घण्टों में सड़क पर ट्रैफ़िक जैम और अपनी बिल्डिंग के मैनेजर के साथ पेश आ रही परेशानियाँ याद आ जातीं।

आखिरकार जब वे विका के घर उन्हीं दो आराम कुर्सियों में बैठे हुए थे तो विका ने ब्रीडा के अनुभव पर टिप्पणी की।

'मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बात कहना चाहती हूँ,' वह बोली। 'अपनी भावनाओं, एहसासों की वजह जानने की कोशिश न करो।'

'हर अहसास को, ज़िन्दगी को पूरी गहराई से जीने की कोशिश करो और जो कुछ तुम रख सकती हो उसे ईश्वर का वरदान समझ कर रख लो। यदि तुम्हें लगता है कि तुम ऐसी दुनिया न झेल पाओगी जिसमें जीने की अहमियत ज़्यादा है, समझने की तुलना में, तो इसी व़क्त जादू की राह छोड़ दो। अपनी भावनाओं का खुलासा करना दृश्य और अदृश्य संसारों के बीच के पुल को तोड़ देने का सबसे अच्छा तरीका है।

भावनाएँ तो बेकाबू जंगली घोड़ों की मानिन्द होती हैं, और ब्रीडा जानती थी कि दिमाग़ से उन पर पूरी तरह काबू कभी नहीं पाया जा सकता। एक बार जब उसका एक बॉयफ्रेंड बिना कोई वजह बताये उसे छोड़ कर चला गया था तो वह महीनों घर पर रही, उस रिश्ते के ताने-बाने को उधेड़ती-बुनती समझने की कोशिश करती रही। फिर भी हर सुबह उसके खयाल से ही जागती और यह जानते हुए, कि गर वो फ़ोन करे, तो वह शायद उससे मिलने को तैयार हो जायेगी।

रसोई में कुत्ता भौंकने लगा। ब्रीडा जानती थी कि यह उस मीटिंग के खत्म होने का संकेत था।

'ओह प्लीज़,' जो कुछ हुआ, उसके बारे में बात भी नहीं की है, वह बरबस बोल उठी। 'और दो सवाल हैं जो मुझे पूछने ही हैं।'

विका खड़ी हो गई। लड़की हर बार सबसे अहम सवाल आखिर तक छोड़े रखती थी।

'मैं जानना चाहती हूँ कि जो पुजारी मैंने देखे थे, क्या वे सचमुच कभी रहे थे?'

'हमें असाधारण अनुभव होते हैं, और फिर दो ही घण्टे बाद हम ख़ुद को विश्वास दिलाने में लगे होते हैं कि यह हमारी कल्पना की उपज थे।' विका किताबों की अल्मारी के पास गई। ब्रीडा को याद आया कि जब वे जंगल में थे, तो वह ख़ुद भी ऐसे लोगों के बारे में सोच रही थी जो असाधारण अहसासों से डरते थे। उसे ख़ुद पर शर्म आने लगी।